CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12.2

धुआँ

ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धुआँ

(कहानी संग्रह)

ब्रजकिशोर

भोजपुरी सहित्य संस्थान
शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-८०००६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

DHUAAN
A Collection of short stories in Bhojpuri
by
Braj Kishore.

- धुआँ : कहानी संग्रह
- सर्वाधिकार : प्रो० ब्रजकिशोर
- प्रथम संस्करण : दिसम्बर, १९७८
- मूल्य : चार रुपया
- आवरण-सज्जा : पाण्डेय सुरेन्द्र
- प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य संस्थान, शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-६
- मुद्रक : कुमार अरविन्द

दि प्रेस दीप्ति

भिखना पहाड़ी, पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धुन्ध धुआँ के–

आज कहानी के शिल्प जिनगी का यथार्थ से सराबोर हो गइल बा। कहानी मन का भीतर ले ढुक के, ओकरा तेज गति का सँगे कदम ताल दे रहल बिआ। आज विश्लेषण, वैज्ञानिकता, सहजता एकरा शिल्प के निखार का रूप में अभिन्न अंग भइल बा। जिनगी के रूप अब सहज नइखे आ ना आदमी का मन पर घटना के प्रभाव सीधा-सपाट रूप में पड़ेला। जिनगी के हर क्षण बड़ा जटिल बा, उलझन भरल बा। एसे आधुनिक बोध का कहानी के विकासो जटिलता से बाँचल नइखे। पिछला तीसेक वरिस में भोजपुरी कहानी भी एह बोध के समेटले बिआ—सँगे-सँगे ओमें जटिलता आ शिल्पगत अझराहटो के समान हो गइल बा।

कथाकार का च'रु ओर जवन जिनगी आ वातावरण के बसतर लपेटाइल बा, ओमें उ बड़ा तकलीफ महसूस करता। आदमी का मन में मानवीय मूल्यन के मोल घटत चल जाता काहें कि ओकर पूरा व्यक्तित्व राजनीति का जाँता में पिसा के चूर हो रहल बा, हर ओर व्यापल अव्यवस्था का ओजे से बिखराव के प्रवृत्ति बढ़ल जाता। कतहीं बिसवास आ असरा के फुल गमकत नइखे लउकत। गरीबी, घुटन आ तनाव से आदमी के दम धुआँ रहल बा—ना त साफ धनकते बा आ ना बुताते बा। एगो बदलाव के स्थिति आ मनः स्थिति जे बा उ सुनुगता। ओद लकड़ी जब सुनुगेलां त धुआँ के अम्बार लाग जाला। समाज आ व्यक्ति—दूनु घुटन से आ टूटन से भीतरे-भीतर धुआँ रहल बा। चाहे जवन वर्ग होखे—गरीब, धनिक, मजूर—सभतर एगो अइसने बेचैनी बा, आकुलता आ धुन्ध बा। अतना कुहा छवले बा कि राह नइखे सूझत। समूचा समाज आ राष्ट्र एह धुआँ भरल वातावरण में घुट रहल बा—एह घुटन आ बदलाव का तड़प के चिन्हासी भर महसूस करे का व्यग्रता में सउँनाइल लेखक के मन एही धुआँ के भोग रहल बा। पूरा सामाजिक-राजनीतिक चेतना के ई धुआँ छाप लेले बा जवना का ओजे से ना संघर्ष के जुझारू तेयारी होता आ ना बदलाव के स्वागत!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह छोट संग्रह में आइल कहानियन में एही धुआंत सुनुगत स्थिति के चित्रण बा। दिशाहीन समाज, राष्ट्र आ व्यक्ति के बेबसी आज बड़ा मार्मिक हो गइल बा, आपन जगे बनावे के कोशिश में आदमी के तड़प ढेर संवेदना खोजत बा। जे नीचे दबाइल-कुंचाइल बा ऊ शेषनाग खानी करवट बदले खातिर बेचैन बा बाकी ओकर बेचैनी एगो राजनीतिक दाव-पेंच में पड़के गलत स्थिति के मृजन कर रहल बा। एह कहानियन में भरसक ई कोशिश कइल गइल बा कि कथाकार एह यथार्थ के उजागर करो आ अनुभूति का स्तर पर भोगल-पावल तथ्य के साफ-बेबाक ढंग से राख सको।

'धुआं' का कहानियन में आधुनिक कहानी का शिल्प के कहाँ तक रक्षा भइल बा ई त विद्वान भाई लोग जान। हं, एगो बात हम निवेदन कर देवे के चाहतानी कि हमरा सोझा अनुभूति विशेष के तटस्थ प्रभान्विति भर रहल बा ना कि कवनो प्रतिवद्ध दृष्टिकोण !

एकरा के एह रूप में प्रकाशित करे ला उकसावे खातिर भाई जगन्नाथ जी, कपिल जी, कृष्णानन्द, पाण्डेय सुरेन्द्र, तैयब जी आ नगेन्द्र जी कुछ उठा ना धइले। अविनाश चन्द्र विद्यार्थी आ अनिल कुमार आंजनेय का हुरपेटला से अपना धुआं के पीके भी एह 'धुआं' के चिन्हासी ममका सोझा राखे के हिसाब कर रहल बानीं। सभकर आभार सिर माथा पर॥

पटना
१२ दिसम्बर, १९७८

—ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धुआँ

व्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९. बालू के भीत

१७. खनतलासी

२५. होसिला

३४. दल बदलू के डायरी

४२. लहोक

५१. एगो आउर अभिमन्यु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालू के भीत

ब्रजकिशोर

डाक्टर विमल के फिएट कार दीपक वस्त्रालय का लगे आके एगो हचका का संगे रुक गइल। शहर के ई नामी दोकान ह। हमेशा दु-चार गो गाड़ी लागल रहेले, लोग खरीदारी में जुमल रहेला। दशहरा पर त भीतर सँसरे के जगे ना रहे। दोकान में काम करे वालन का सोझ मुँहे बतिआवे के सँवास ना पड़े। रंग-विरंग का साड़ी-ब्लाउज में एक-से-एक सुन्नर मेहरारुन से हँस-हँस के बतिआवत मनो लागेला त एगो साड़ी कीने खातिर सँउसे दोकान के माल सोझा टलिया दंवे में अनकुसो बरेला। बाकी अनकुसइला से का होई? ईहे रोजी बा, एही से पेट में दुगो दाना जाए के बा त चाहे मन भीतरे-भीतरे कतनो कहुँचे, कतनो गरिआवे बाकी ऊपर से त मुस्कुराहीं के बा, जतना हो सके मिसरी घोर के मीठ बोले के बा "ई लेटेस्ट नमूना ह बहन जी, बाह, ई प्रिंट रउरा देह पर अइसन खिली कि मत पूछीं!··लीं, अँचरा कइसन खुली····चुन के लहर कइसन वेंवत बइठाईं····।" आ खड़ा होके साड़ी पेन्हला पर कइसन लागी ईहो देखा देवे के बा। गेंहकी के मन मोताबिक बोलहीं के पड़ी — काहे कि ओकरा गाँठ में से माल निकाले के बा। हर दोकानदार ईहे करेला बाकी एह दीपक बस्त्रालय में ई सभ तनी ढेरे होला। वेंचनिहार अइसन मक्खन मारे लेस, अइसन चिकनावे लेस कि चिरई बहके ना! ओकर मनो रमेला आ माल महँगो हाथे लगला पर बुझाला कि सेतिहें छूटल ह।

विमल भीड़ का अन्दाजे सवेरगराहे आइल रहस। कार पार्क कके उतरले। उनका जबरे रंजना बाहर निकलली आ हरसिंगार का फूल खानी सुगन्धि के हिलकोरा हवा में उठावत पति का सँगे-सँगे दोकान में हेल गइली। ना जाने काहे उनुकर मन बिमल से मिल के एक हो जाए के करत रहे। घर से चले का बेरा जब ऊ अमिय के झूमके चूमत रहली त उनुका लागल कि ऊ बेटा के ना ओकरा बाप के चूमत होखस। आज काहे दोना उनुका अन्तर्मन से अनुराग के धार फूटत रहे आ दिल के सब पोर रस से भींजत रहे। उनुकर मन रह-रह के गील हो जात रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विमल के मनवो गुनगुनात रहे। एगो कसमसाहट बुझात रहे। ऊ रह-रह के रंजना कावर ललकत निगाह डाल लेस। जब-जब ऊ रंजना के देखेलन त बुझाला कि कहीं भीतर ले बिजुरी चमक गइल होखे—कहीं दूर ले लेसा गइल होखे। जब बाँह धरस त लागे कि बेला के चँगेली भर फूल केहू देह पर डाल देले होखे। जबे उ देखस त मन करे कि अँकवार भर लेस। दोकान में ढुकले त रंजना का हाथ पर उनुकर पकड़ बढ़ गइल। तनी मने-मने गुमानो बुझाइल। रंजना का आवते जइसे दोकान में एगो लहर आ गइल होखे। बराबर खरीदारी कइला से दोकान पर काम करे वाला सभे चिन्हार रहे। मालिक के इनका पर नजर पड़ल त मुस्कुराहट का सँगे सत्कार कइले। हाथ जोड़ के कहले—'आईं, आईं डाक्टर साहेब। ढेर दिन पर एने राह भुलइनी हैं।' • •रंजना जी, त लागता एम्हर आइले छोड़ दीहली। • •"

"कुछ भिराह रहला से टाइम ना पड़त रहल। मरीज के एघरी भीड़ बढ़ न जाला।' • • रंजना अकेले निकलबे ना करस।' • • "विमल का ई कहत बड़ा नीमन लागल। रंजना का कपड़ा के सउख रहे। सिंगार पटार कके, हमेशा मेकअप में रहे के उनका आदत खानी हो गइल बा। एक त अइसहीं लाखन में एक, ओपर सजल-सँवरल रूप त जइसे करेजा काढ़ लेवे ला।' • 'जब-जब विमल रंजना के लेके बहरा निकलस त उनुकर मन करे कि रंजना के मुँह पर आपन रूमाल ध देस जे से उ लुका जाव, भुक्खड़न का तेज नजर से कहीं एह फूल पर रेघारी ना खींचा जाव!

विमल कवनो गलत ना सोचस। रंजना अइमनके रहली। देखे से देखते रह जाय। एगो हूक जरूर उठे मन में। आँख गड़ जाय। नीमन चीझ कतहीं होखे ओकरा के बटोर लेवे खातिर मन लुसफुसइबे करेला। फूल त देखे के चीझ हइले ह।

विमल आ रंजना देर ले कपड़ा देखत आ पसन करत रहल लोग। रंजना का सोझा ऊँच उढ़ुक लाग गइल रहे कपड़न के, साड़ी, ब्लाउज के पीस, पैंट, कमीज के कपड़ा, 'ओह, कइसन फाइन पीस बा। आजुए त ई माल आइल ह। अवहीं पहिलका हाली रउरे के देखा रहल बानीं।"- - एक घंटा का बाद रंजना एगो बड़-हन पैकेट लेले विमल का साथे दोकान से बहरा निकलली।

सामने नजर पड़ते डाक्टर विमल के छाती धक् से हो गइल। चिहा के पूछले—'अरे, कार का हो गइल ?'

—'आँय।- - ईहवें त पार्क कइले रहीं रउआ।' रंजना चकचिहाइले कहली। उनका लागल जइसे देह में बहत रक्त के चाल एक ब एक रूक गइल होखे।

—'लौक त कइले रहली हँ न ?' रंजना जइसे अपने से बोलली। उनका उमंग के लहर जइसे कवनो बड़हन चट्टान के किनार सोख गइल होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—हँ, रंजना !- - -लेकिन- - -तुँ एहीजा रूक। हम देखतानीं। कतहीं अगल-बगल में ना होखे।- -''

—लेकिन लागल त एहीजा रहल ह !

—कवन ठीक। ए घरी कइसन समय आ गइल बा नइखू जानत। एक डेग चलल मोहाल बा, एकू पल सुख-चैन से केहू जिनगी नइखे जी सकत। कवन चीझ कब गुम हो जाई ठेकाना नइखे। कहीं मोका पाके कवनो उड़ा त ना ले गइल ? तनीं हम देख लीं - -

विमल हर कार के घूर-घूर के देखे लगले। एक घण्टा पहिले खाली पाँचेगो गाड़ी पार्क रहे—अबहीं पचासन गाड़ी लाग गइली स। साइट भी एकदम नाके बा। एही मे दोकानो खूब चलेला।- - कवनो जादू से उनुका फिएट के एम्बेसेडर त ना बना घलल्ख ! सोझा जतना गाडी रहे सभके देख गइले। थोड़की-सा आगा मुहें बढ़ला पर उनुकर आँख गली का मोड़ पर ठाढ़ एगो गाड़ी पर गइल।- - अरे रंग त उनहीं का कार के बुझाता- -ओइसने लाल।- -कहीं उहे त ना ह ! लेकिन उहाँ ले जाई कइसे। कवन जिन्न आ गइल। गाड़ी पार्क भइल दोकान का बगल में आ उ आ गइल - -। थोड़ा अउर आगा अइला पर रंग साफ हो गइल। उहे त। उनहीं के कार ह। मन में खुशी के एगो उमग उठल। मिजाज में मिजाज आइल। फुफुत में पड़ल चोला का तनी धड़ान मिलल। उँहईं से चीकरले—'मिल गइल।- -रंजना !- -इहाँ बा, इहाँ।

रंजनो के साँस एन्हईं टँगाइल रहे। उनुका कुछे छन बुझाय कि बरिस बीत गइल। उनुकर पपनी खूलल रहे। भीतर से कुछ अइसन उनहत रहे कि बुझाय पपनी के पाँख थाक जाई आ ओकरा पोर प बूँद चुहचुहा आई।....कतना सबख से ऊ विमल से ई कार कीनवबले रली ह।....

विमल कावर उनुकर आँख-कान लागल रहे। उनुकर चिलाइल सुनली त झटक के पैकेट हाथ में सम्हरले उनुका ओर चलली। जोर से चले के आदत ना रहे। ऊँच एड़ी के सैंडिल। नीचा ले फुफुती।....

विमल सरक के गली का मोड़ तक ले आ गइले। ई मोड़ तनी साँझ के अन्हार का छाँह में पड़ जाला। अबहीं ऊ मोड़ पर पहुँचलहीं रहले कि दू आदमी लपक के उनुका लगे आइल। बिमल के मन कुछ सकेता में पड़ गइल। ऊ सहमल-सहमल ओने तकलन। एगोरा का हाथे पिस्तौल रहे। पिस्तौल के मुँह बिमल कावर तनल रहे। गाड़ी मिल गइला के सभ खुशी भम्ह लोटे लागल। मन में साँझ ललिमा का जगे सियाही पोताए लागल ! साँसे देह में झुरझुरी आ गइल। देह में त कँपकँपी आइल बाकी पसेना से लिलार बोथा गइल। उनुका समुझत देर ना लागल कि ममिला का ह।....लेकिन कार चोराके उनुका आवे के बाट जोहे के ओजे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनुका बुद्धि में ना अँटल। उनका मुंह से बकार ना निकलल। तालू चटक गइल। थूक ना घोंटाय। सामने से उनुका रंजना आवत नजर अइली। गली पर मुड़ते रंजना पूछलीं—"इहवाँ कहसे आइल ह ?"

—हमनी ले अइलीं ह मेम साहेब !" आवाज जतने कड़ेर रहे, ओमें ओतने जहर रहे।

रंजना सुन्न हो गइली। सच्चाई के पता अब चलल। साँझे ई सब हो जाई, ई उनुका गुमान ना रल। विमल के पोजिसन देख के त रंजना का रोवाई छूटे लागल। करेजा बुझाइल कि बहरा निकल आई।

रंजना का आ गइला से विमल का जनक कुछ दम मिलल। कुछ हियाव बढ़ल। बात बुझाइल आ तनिक रोखिया के कहले—"लेकिन काहे ?...."

—मामूली बात बा डाक्टर ।...हमनी चोर ना हईं। हमनी का लगे खुद कार बा। बाकी दिल मजबूर बा। हमनी का एगो फूल देखले बानीं। जबले ओह फूल के हमनीं सुँघब ना, डाढ़ पर से तुड़ के गर में ना डालब तबले कल नइखे।.... हमनीं का रंजना चाहीं।...."

विमल जइसे आकास से गिरले। बात के तह कुछ आउर खुलल। खीस से देह कांपे लागल। आंख लाल हो गइल। चेहरा भी गँवे-गँवे सँझलौका खानी लाल होत-होत झँवा गइल।

—तहरा लगे नीमन बँगला बा, कार बा, काफी आमदनी बा, नोंकर बा, बेटा बा....। जिनगी में तहरा बहारे बहार बा। सभ मजा अकसरूए लटे के तहरा कवन हक बा ?...एह खूबसूरत छोकरी के अकेले भोगे के तहरा कवनो हक नइखे। सौन्दर्य केहू के बपौती ना होला। ओकरा के देखे के, भोगे के, हवेखे के पूरा समाज का हक बा।...." पिस्तौल वाला आपन फिलासफी के साफ कहलस।

—हम चोरी त नइखीं करत। केहू के छीनत त नइखीं। लूट-पाट त नइखीं मचावत।....हमरा लगे जे बा ऊ हमार आपन कमाई ह।....

—गलत। समाज के, गरीबन के चूस-चूस के तुं कोठी ठाढ़ कइले बाड़।... ई औरत भी तहार कमाई ह कि समाज तहरा के देले बा।

—ई हमार पत्नी हई। पत्नी एक अदमी के होले। ई समाज के व्यवस्था ह।

—समाज के व्यवस्था। ओह बुजुंआ समाज के जहां हजारन गरीब का एक जून भरपेट दाना मोहाल बा आ विमल अपना रंजना का जवरे मउज मारतारे।....अइसन समाज में हमनी आग लगा देब। ई व्यवस्था तुड़हीं खातिर हमनीं जामल बानी। शादी आ पति-पत्नी दकियानूसी विचार ह। मरद आ औरत का बीच में बस एकेगो रिस्ता बा— एगो नाता बा—सेक्स के। जबले ऊ बिछावन ना गरमावे ऊ औरत ना।...पांच बरिस से तुं रंजना के भोग रहल बाड़—तहरा अफ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोस ना होखे के चाहीं ।....अब तनी दोसरो के त चीखे द ।....तहरा कार मिल जाई, बाकी रंजना ना ।'

—ना, ना !...कार ले जा ।....हम....

—मोह मत कर डाक्टर । हर चीझ के बांट के खाए के आदत डाल । माओ के पढ़ । रंजना के ई पातर-पातर पान का पतई अइसन ओठ, घीव खानी चिक्कन देह, ई गाल, ई गदराइल जवानी—अरे सभ त तहार जूठ ह । जूठ छोड़े में हिचक का ।

—ना होई । अइसन ना होई ।

—ईहे होई ।....कहत-कहत एगो सजोर भुक्का बिमल का कनपटी पर लागल । माथ झनझना गइल । ओमें अतना जोर रहे कि ऊ एकोरी भहराए लेले । बिमल के मुट्ठी तना गइल । दांत कटकटाए लागल । दिमाग सुन्न पड़े लागल । भीतर से अइसन हुमक आइल कि ऊ कूद पड़स एगो का देह पर ।....तले ओकरा पीठ से कवनो चीझ के नोंख चुभे लागल । अब ओकरा आगा-पाछा दुनु ओरी मउअत नाचे लागल । रंजना सरक के लगे आवे लगली ।

—अलग रह छोकरी ! हमनी अबहीं तोरा के कवनो कीमत पर मरे ना देब स । डाक्टर ना मनिहें त एहीजा इनका छाती में गोली उतर जाई ।"'तहरा के त हर हालत में लेइए जाएब स ।""इनकर लाश एहीजा तड़पत रही आ लोग तमाशा देखत रही ।

—मार, मार दे गोली । बाकी ई ना होई । रंजना हमार ह, हमार रहीं, खाली हमार""' बिमल के मन चिकर पड़ल बाकी ओकर आवाज कतना मेहराइल आ करुण रहे ।

—'ना-ना !' रंजना गोर पर गिर पड़ल—"मत मार, मत मार ।'

अब रंजना के दु आदमी पाँखुर पकड़ लेले रहे, ताकि ऊ भागो ना । रंजना बिमल कावर घूमके कहलस—'मान जा बिमल । तहरा ना रहला पर अमिय के का होई ? ऊ अनाथ हो जाई । तहरा कतना रंजना मिलिहें बाकी एह रंजना के अमिय फेर ना मिलिहें ।""ऊ राह के भिखारी हो जाई बिमल । दाना-दाना ला तरसे लागी । ""हम त तहरे हईं, तहरे रहब । हमार आत्मा तहरा जवरे रही । ओकरा के के छीनी ? - - हम फेर आएब—तहरा लगे - -।

—'लड़की चतुर बिआ । - - ईहे साला भुक्खड़ बा । बोले त रगड़ दे ।' ऊ दुनु रंजना के घसेट के कार में बइठा लेलेस । रंजना सिसुकत रहे । अछोधा होके छपिटात रहे । अईंठत रहे । दुनु ओरी से पाँखुर धके पीठ पर चढ़ा देलेस । ऊ पीड़ा से कुहुँक उठल ! पछिला सिट पर गठरी खानी ओकरा के दबोचले उ दईंत खानी जमल रहले स आ पाँख कतरल चिरई लेखा रंजना छपिटात रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जबले कार दूर ना निकल गइल, बिमल पिस्तौल का घेरा में रहले। एह खटपट के कुछ लोग दूर से देखत रहे। कार पर बइठावत में रंजना जे चिचिआइल त ओकर आवाज सुनके दोकान से ढेर लोग आ गइल। सभे सरक के नियरा आ गइल।

—का हो गइल साहेब ?

का जवाब देस बिमल !

ऊ भोंकार पार के रोवे लगले। ओह का कहस ?....का हो गइल ई, कवना उमंग से दुनु आदमी बाजार करे निकलल रल। अब का होई ? हम केकरा लगे जाईं ? बदमाश- - साला - - ओह, ऊ कुछ सोच नइखे पावत। दिमाग के नस जइसे फाटल जाता।

—'अरे बिमल, का ह हो?' अपना कार से मुरी निकाल के सन्तोष पूछले।

बिमल उनुका ओरी तकले। लोर से आंख दहाहल रहे। सन्तोष के बोल उनुका कान में कतहीं दूर से आवत घंटी लेखा सुनाइल। उनुका अतने बुझाइल कि केहू ह, चिन्हा-परिचे के केहू ह। ऊ धउरि के उनुका कार में बइठ गइले।

सन्तोष का मजमा देख के लागल कि कुछ अनहोनी हो गइल बा। एसे बिना पूछले कार बढ़ा देहले। दस कदम चलला का बाद पूछले—'कहवां ?'

—थाना !

बगल के थाना ले ऊ चुपचाप कार चलावत गइले। कुछ पूछले ना।

थाना पहुँच के दुनु जाना दरोगा भीरी गइले। सन्तोष का सभ हाल ओहिजा मालूम भइल। - - बिमल के थाना आइल बेकार हो गइल। पुलिस सब सुनके गुम्मी साध लेलस। दरोगा जी कहले —'हमनी कोसिस करब डाक्टर साहेब। बाकी का कहीं। कहत में लाज लागता। हमनियो मजबूर बानी। हमरो बाल-बच्चा बा। ओकनी के भूख से तड़पत प्रान देत हम नइखीं देखे के चाहत।....समुझीं कि एह गुण्डन के साली सरकार तरजीह देतिया। ऊपर का नेतन का शह पर ई हड़बोंग मचवले बाड़ेस। आंख का सोझा ई सभ होता।....हमनी - -। समुझीं कि हुकुमे नइखे - -'

—केकर हुकुम ?

—सरकार के।

—त सरकार का चाहतिया ? ईहे सभ ? सरकारे के लोग रंजना के उठा ले गइल ह ? ना-ना सरकार जनता का जान-माल के रक्षा खातिर होले, ओकरा सुख-आराम के सुविधा जोगावे खातिर होले।

—सरकार नेता लोग बनावेला। नेता का वोट चाहीं। चुनाव जीते के चाहीं। बिना चुनाव जीतले गोटी लाल ना होई। चुनाव में जीते खातिर बोगस वोट गिरे के चाहीं। बोगस वोट गुण्डा आ लुच्चे-लफंगन का मदद से मिली। आज एकोगो अइसन गुण्डा शहर में नइखन जे सरकार का कवनो ना कवनो नेता का छाँह में पोढ़ नइखन होत।

—खैर....देखीं। कहीं रउआ कुछ कर सकीं। अबहीं कवनो देर नइखे भइल। आधा घंटा भी ना भइल कि बीच सड़क पर सैकड़न लोग का सोझा ई सभ ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल - - अन्धेर बा।"

विमल थाना से उठ के दउरले। कार में बइठ के मंत्री का कोठी कावर चलले। ऊ डाक्टर रहस। इज्जतदार नागरिक। आजाद देश के बड़ नागरिक। उनुका भरोसा रहे कि सरकार ई सभ सुनके चुप ना रही! केहू के लुगा लुटाय आ सरकार ताकत रहे!

चानस रहे। गृहमंत्री कोठी पर भेंट गइले। बहुत लोग बइठका में बइठल रहे। गप्प-शप्प जमल रहे। विमल भोंकार पाड़त बइठका में ढुकले। लोग चिहा गइल। चमचा दम सधले सुने लगलेस। सब हाल कहलन सुनके मंत्री जी कहलन— 'हम मजबूर बानी डाक्टर। हमरा ईहे काम नइखे। हम फोन क देतानी। सुन्नर ओरतन के का भरोसा। कहीं उहे त जोगार ना बइठवले रली ह। पता करीं। ....हम पुलिस के फोन क देतानी....''

फोन खनखनाइल। एस. पी. से बात भइल।

—घरे जाईं। आराम करीं। सुबह तक राउर पत्नी जरूर मिल जइ-हें। एस. पी. से बात भइए गइल त।....ई सभ परेशान बा। केकरा-केकरा मेहरारु के ऊ देखभाल करस। पुलिस मंत्री आ गृह मंत्री कवना-कवना सुन्नर लड़किन का पाछा भागत फिरस।" "हमार सहानभूति रउआ सँगे बा। लेकिन कहीं, हम ततकाल दोसर का कर सकतानी?"

—एगो रंजना के सवाल नइखे। ई रोज होता। पत्नी, बहू बेटी के का ईहे हालत होई? राह चलते ओकनी के इज्जत लुटाई आ हमनी देखत रहे बा सरकार टुकुर-टुकुर ताकत रही?....

गृह मंत्री उठके चल देहले। उनुका कवनो पार्टी का मिटिंग में जाए के रहे। दस बजे रात के कैबिनेट रहे। एगो संगीत नाच का सम्मेलन के उद्घाटन करे के रहे। बहुत काम रहे। साँस लेवे के फुरसत ना रहे।

गृह मंत्री नामी नेता रहस। उनुकर तूती बोले। बिमल उठके बहरा अइले। बुझाय ना का करस। संतोष उनका पीठि पर हाथ धइले। बइठका में बइठल चमचा लोग के एगो ठहाका गूँजल। ऊ लोग कुछ कहके चुहल कइले रहे। मउज के बात रहे नु? ....

चिरई के जान जाय लरिकन के खेलवना!

—सार लोग तितिली बनवले फिरेला। ड्रेस अइसन कि काठो के करेजा ललच जाय.... । आरे, कउआ के मलीदा देखइब त लूझी ना?

बिमल थूक घोंटले। बुझाइल कि केहू बरछी मारता।....ई साला सब हराम के खातारे सन। बइठ के पगुरावे के बा खाली। अईंन ढेंसरावत बाड़न स हरामजादा - - - !

बिमल रोवत रहे। मंत्री जी का बंगला का आगा लॉन में ओकर लोर गिर-गिरके पसरत जात रहे।.... मुख्य मंत्री किहाँ भी लोर ढरले भर रहल।

—हमरा रंजना के बचा लीं हुजूर!

सुन के मुख्य मंत्री के चेहरा लाल हो गइल सेनुरिया आम लेखा। उनुकर माथा झुक गइल। उनुकर आँख डबडबा गइल। पपनी पर लगल कि लोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाचे लागल। साझा सरकार के मुख्य मंत्री। वेचारे !

ऊ गवें से कहले—क्षमा कर भाई। हम का करीं, का ना करीं। कवनो सुनते नइखे। हमरा उगिलते बनता ना लीलते बानता।···देखलीं ना, हम उपासो पड़नी, अनसन कइली। कवनीं असर ना पड़ल।····जंगलियन में घेरा गइल बानी। सभे बर्बर बा। आदमियत ओरा गइल वा। हम का करीं।····मजबूर।···· हमरा रिजाइन करे के पड़ी।- -

मुख्य मंत्री जी के ई हाल रहे।

विमल का कहस, का करस। रंजना मिलस भा उफर पड़स—मंत्री के त चानी बा। मुख्य मंत्री जी के भाषन के आदत। पीं आ देहले दू-चार धूँट।

बिमल चुपचाप उठ के चल देलन।

दउड़-धूपे में आधारात बीत गइल रहे। घर पर सभे चिन्ता में डूबत-उतरात रहे। अमिय शायद् बाट जोहते-जोहत सुत गइल रहे। रोवल रहे वेचारा—माई के खोजत, पापा के ढूँढ़त। आँख से वहल लोर के धार सूख के ओकरा गाल पर चिन्हासी बना देले रहे।

अमिय का लगे विमल कुछ देर चुपचाप ठाढ़ रहले—फेर फफक-फफक के रोवे लगले। काल्ह उठला पर अमिय के का जबाब दीहें। का कहिहें ? सुते के सवाले ना रहे। माथा दरद से फाटत रहे। आँख के धार ना सूखे, ना चिन्ता के तार टूटे।

गेट पर कार के हौर्न बाजल। भिनसहार हो चलल रहे। डाक्टर लपक के उठले। आ गइली शायद - - रंजना आ गइलीं।

गेट तकले ऊ धउर के गइले।

कार वापस आ गइल रहे।

गेट पर कारे रहे, उनहीं के कार।

पछिला सिट पर रंजना पड़ल रहलीं।

रंजना—बिल्कुल निर्वसन ! - - लँगटे !

बाकी बिमल का संकोच ना भइल, लाज ना लागल। रंजना कपड़ा में बागीं कि लँगटे—ई देखे के सुधि उनुका ना रहे ! ऊ झुक के रंजना के माथा चूम लेहले। फेरु अँकवार भर के उठावे के चहले। बाकी रंजना एक़ोरी लुढ़क गइली।

अचानक बिमल के होस लवटल। स्थिति बुझाइल। उनुका करेजा में जोर के दर्द उठल आ ऊ चिक्कड़ के गेट पर वेहोश होके गिर गइले। देश के आजाद पंछी अपना खोंता में छपिटा छपिटा के अपना भाग्य के खूदे दरकचत रहे ! बालू के भीत ढहत रहे आ बिमल अँताइल वेहोश रहले। उनुका अँकवारी में रंजना के लाश रहे।

रंजना मर गइल रहलीं आ उनुकर लँगटे लाश देश के बहुचर्चित समाजवाद के तस्वीर बनके सूतल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खनतलासी

बरसाती साँझ। आकास में बदरी के जमात जमल त ना रहे बाकिर लफंगन खानी कुछ मनचला टुकड़ा एने-ओने मँड़रात रहलेसन। डूबत सुरुज के ललाई ओकनी पर जवानी के रंग छिड़कत रहे। किरिनन का मुस्कुराहट पर सउँसे अकासे मदहोश रहे जनु ओकरे अँचरा पकड़े खातिर बदरिया के छँवड़न के गोल धाकाधुकी कइले रहे।

हम गाँव से बहरी सड़क पर टहलत रहीं। आँख बरसाती साँझ के रूप निहार के अघात ना रहे। आस-पास आम, जामुन, आ महुआ के लमहर-लमहर छितनार गाछ रहले सन। गाछन के पतई झूम-झूम के सँझौती किरिन के चूमत रहे कतहीं कतहीं ताड़ का मथनी पर बइठल गीध आ चिल्होर चुपचाप पच्छिम कावर देखत रहले स—दार्शनिक लेखा, डूबत सुरुज में जिनगी के बिखरल मुस्कान सहेजत रहले स।

सड़क पीच होखे के रहे। माटी भरा गइल रहे। माटी खातिर अगल-बगल का खेतन के खोनल गइल रहे। बरसात के पानी एह गड़हन में भरल रहे। झींगुर बड़ा प्रेम से अपना सारंगी पर सुर साधत रहलेस।

घूमत-घूमत ढेर दूर ले चल गइल रहीं। पिलुआ-पताई के डर। अन्हार के दोहरा बदन देखते घर कावर लवट चललीं। आँख अझुराइल रहली स साँझ के जव-जव आगर रूप निरेखे में आ कान पतले रहीं दूर से आवत गीत का धुन के हवेखे में—

छोड़ द राजा के नोकरिया,
बालम, मती जा बिदेस !
पाँच हो रुपइया के तहरो नोकरिया,
दस घरहीं पर देब !
भादो-भदवरवा के निसी अधिरतिया
हाय, मोरा धड़के करेज !
ऊपर अकसवा में तड़पे बिजुरिया,
बिसुरेला सून मोरा सेज !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम मस्त चलल जात रहीं घर कावर कि अवचके सुनाइल—"मार, सरवा के !........" हम चिहा गइनीं । मन धरती पर आ गइल । कान सजग भइल । सोझे धूरन चाचा का दलान पर लोगन के भीड़ लउकल ! साँझ का उतरते लालटेन का अंजोरा अतना बिटोर काहे हो गइल ? ओही भीड़ में से केहू चिल्ला के कहले रहे—"मार सरवा के !....."कान पतला पर बुझाइल कि एगो कठ से रोब, आ अधिकार के आग बरसता आ एके जवरे कैगो कंठ मिल के करुणा का सहमल पानी के फुहारा दे रहल बाड़ेस । बीच-बीच में कुछ कंठ दूनू ओर से बोलत बुझाव । काफी गहमागहमी बुझाइल ।

गाँव गिरान में अइसनके मौका पर लोग का कुछ मनोरंजन के माल मुफुते भेंटाला । एसे सुनते मातर लोग गवें-गवें भीड़ बढ़ावत जाला—आ-आ के, सँसर-सँसर के, घेंट अलगा के भीड़ में मिलत जाला । ढेर लोग का चेहरा पर निपटे एगो तमाशा देखे के भाव छितराइल रहेला आ कुछ लोग का ओठन पर अजीब गुमसाइल मुस्कान रह-रह के लालटेन का टेम्हीं लेखा भुक-भुक करत रहेलें ! गँवई माहौल के चउकठे अइसन होला ।

हमहूँ सड़क पर से उतर के भीड़ का लगे आ गइलीं । दू मिनट ले दम सधला का बाद बात कुछ साफ भइल । सोझा दारोगा जी एगो डंटा डोलावत रह-रह के साँढ़ खानी डेंकरत रहले आ पचीस-तीस गो मरद—मेहरारू उनुका हर हुरकान पर गाय अस काँपत रहलेसन ।

काल्हुए रात खान नेटुआ-बनजारन के एगो गोल गाँव का लगहीं स्कूल का पच्छिमारा बगइचा में टिक गइल रहे । देखते-देखते ओजा रमन-चमन हो गइल; दू दर्जन से ढेर सिरकी तना गइलीस—कान्ह पर, बहँगी पर आ घोड़ा बैल पर ढोआत घर घंटा-दू घंटा में बन के तेयार हो गइल रहे । चूल्हा-चाकी के इन्तजाम भइल, धुँआ-धक्कड़ होखे लागल रहे । कई दर्जन छोट-बड़ लरिका, बीस गो ले मेहरारू, आ लगभग अतने मरदन के एगो पुरवा दू-चार दिन खातिर बगइचा में बस गइल रहे ।

एने से जात में दूगो सिरकिन का आगा बइठल मेहरारुन के हाथ-मुँह चमका-चमका के झगड़ा करत देखले रहुईं बाकर एह बेरा सभ अपना-अपना डेरा का आगा से टुकुर-टुकुर बथान कावर ताकताड़ीसन । ओह बेरा के ताल ठोकल, तावड़ तोड़ गारी के गोली दागल एह बेरा नइखे । मुँह पर अन्हार झबदल बुझाता ।

—"सउँसे इलाका तबाह हो गइल बा । हर रात चोरी, सभ जगे चोरी ! एक रात में सात-सात गो सेन्ह !! जइसे एह सरवन के पँवरा पड़ेला, हमार नाक में दम हो जाला ! नीन हेरा जाला । देखे में कइसन सोझिया बुझाताड़ेसन बाकिर एमें कवनो के अंतरी पचहत्तर हाथ से कम नइखे । एक-से-एक कमीना बाड़ेसन ।··· सभत्तर एकनी के जिरात ह, बाप के माल ह, छूट्टा साँढ़ खानी चरत फिरेला लोग !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार हण्टर तोहनी के हुलिया ना टाइट क दिहनीं त कहिह लोगन ! सभ खेंचड़ई घुसड़ जाई ! ...." दारोगा जी का मुँह से एकरस देश-भक्ति आ जन-सेवा के भाव-गंगा उमड़त रहली !

दारोगा जी थाना भर के मालिक। इनका मर्जी वगैर थाना भर में कतहीं पतई ना खरके, बयारो ना सिसके ! जब से देश आजाद भइल देश के सउँसे भार इनहीं का कान्हा पर लदा गइल। बेचारे का कान्हो फेरे के सवँस ना पड़े। लोग सुख-चैन से झपकी ले सको एह खातिर ई आपन नीन हराम कइले रहेले। रत्ती रत्ती के हाल जानेले चप्पा-चप्पा के खबर राखेलन। केकरा हाँडी में का पाकता, कवन चाउर सीझता, कहाँ कवन प पड़ बेलाता—सभ के जाने के पड़ेला पुलिस का। ना जानी त छानी कहाँ से ! राते एह इलाका में ई नेटुअन के गरोह ढुकल आ सात-सात गाँव में सेन्ह मरा गइल ! चमइन से केहू का पेट लुकाई ?

लोग अनेरे कुछ कहत रहेला। पुलिस के बाँह कतना लमहर ह-ई सभे जानता। आजादी का बाद से लाल मुरइठा देख के जनता भागत नइखे, मेहन मार लेता, कबो-कबो गाभियो के बोल बोल देता बाकिर सोझा पड़ला पर दुआ-सलाम करहीं के पड़ता। कमजोर जे बा; गरीब जे बा ओकरा देह पर त पाप के भूत इकठ्ठे बिटुराइले रहेलेस। पुलिस ओकर ओझाई करे के कैगो तरीका जानेले। दरोगा जी के नाक बड़ तेज बिआ। नेटुआ रात अइले स आ आजुए इनिका एकनी का सब करनी के पता चल गइल ! करतब पाले का एही चउकसी से त देश में अमन-चैन बा, सभकर जान-माल के हिफाजत बा। सभी दरोगा अगर इनहीं खानी हो जास त फेर केहू का बाकस-पेटी में ताला ना लगावे के पड़ी ! ना बाकस रही, ना ताला लागी !!

—हमनी गरीब बानी बाबू। बस अपना पहुँचा के बल बा। एकरे कमाई खाए के बा। कवनो दोसर गुजारा के अलम नइखे, सरकार ! हमनी चोरी ना...." कैगो कण्ठ से एके सँगे घिघिआइल आवाज निकलल।

—गरीब के ससुर ! गरीब ना रहितन लोगिन त चोरिया के करित ....? बात बनावत लाज ना लागे ? देखीं लोगन, हई देह गरीब के ह—हई लाल-लाल गाल दरिद्दर भइला के निशानी हवे।...." दरोगा जी का मुँह से गारियन के पिच-कारी चले लागल। गारी के डिक्शनरी तेयार करे खातिर भारत सरकार का एगो कमिटी बनावे के होखे त कवनो राज के एक दर्जन थानेदार लोगन के चुन लेवे के चाहीं। ओह कोश पर फेर अकादमी पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार के के कहो नोबलो प्राइज मिल जाई ! अइसन भंडार श्रुति बनके रह जाता। ई देश के अनमोल थाती कहीं खतम मत हो जाय ! हमरा दिमाग में सिनेमा का रील लेखा हर बात के प्रतिक्रिया चलत रहेले ! बुद्धिजीवी के दिमाग आखिर का करी ? ऊ त खाली रही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना। खाली भइल कि शैतान बइठल। बुद्धिजीवी केहू से डेराला—त शैताने से ....! भगवान त अपने पनाह मंगिले बाकिर....। आज देश का आजादी मिलला तीस बरिस से ऊपर भइल। हर ओर तरक्की भइल। एगो ग्रेजुएट अगर दस गो निछक्का बिना डालडा मेरावल गारी के पूड़ियो ना छान सकी त ओकर डिग्री कवना काम के! सोझ अंगुरी से घीव निकली? पुलिस आ दरोगा का त रोजे घीवे निकाले के बा। आदतन अगर अंगुरिय टेढ़ हो जाय, त एमें दोष केकर बा?

—गरीबो के मन होला बाबू। मेहनत में बरकत बा, मालिक!! जे दोसरा के कवर छीन के आपन पेट भरेला ओकर गाल पर ललाई ना रही सरकार! ओपर त रकत के चासनी आ जाई! हमनी मजूरा हई। बल-पाहुँच में बिसवास बा। देह-जाँगर में भरोसा बा, अपना काम के आशा बा, सरकार!...." कवनो नेटुआ कहलस। जवान रहे। मस भींजत होई? ई कुछ बात भइल। नयका हवा-पानी के रँगत लुकवला से लुकाई? दारोगा जी आपन मोंछ अइठले। फेरु हाथ में धइल डंटा के होले-होले घुमावते अन्हारे में तनी आँख तड़रले!

—अतने ना मालिक। हमनी का चहबे का करी। दू कवर। पेट भर जाय, बस। का नीमन, का बेजांय। तर नून, ना ऊपर तियना। हमनी का जवन साग-सत्तू जुरल, ओही में सन्तोष बा। ना ऊधा के लेवे के बा, ना माधो के देवे के बा। हमनी चोरी काहे करब?....मरद लोग टुकुर-टुकुर ताकत रहला आ हमनी पीपर-पकड़ी के पतई ले काट के अपना माल-गोरू के अघवा दिलेसन? हाथ में घट्ठा पड़ गइल बा, मालिक काम के!....हमनी का चोरी कइला के का जरूरत?...."एगो कोना में ठाढ़ एगो जवान नेटुइन के मिसरी मतिन मीठ बाकिर शोख आवाज सुनाइल!

—हँ-हँ; गाँवा-गाईं घूम के माल-पत्ता के पता लगा के एके रात में सात-सात गो सेन्हो लगा लेलूसन। कि ना!....' दारोगा जी ओकरा के घूरे लगले। अन्हारा मे ऊ लजाइल कि तमकल ना मालूम हो सकल।

—जब पापे के पइसा खाए के रहित त फेर दिन-रात हाय-हाय काहे के करे के पड़ित सरकार!....ईहो लोग कहीं नोकरी चाकरी करित, पेटी-उरदी पेन्हित आ हमनियो घर में चूल्हा-चउकी क के सबख-सिंगार करतीसन!...." ओह लरिकी के आवाज मध खानी मीठ रहे बाकिर पता ना बतिया तिरछोल काहे रहे!

—"ना चुप्प रहबे। ईहो ससुरी सरकार से जवान लड़ावतिया! बक-बक बन्न कर।" एगो बूढ़ नेटुआ डँटलस!

—"बोलत कइसे बिआ।.... ईहे धरम के अवतार हिअ। जनु जगत्तर के पाप बहुरिया लोग करता आ ई साली सीता-सतवन्ती बनल फिरतिया! .... सत्तर मूस लील के बिलारो चलली हज के?....हम सभ पाप-पुन्न तुरन्ते बता देतानीं।...."

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दारोगा जी गरमा गइले। बात लागे वाली रहवे कइल। ई पहिले का नेटुअन खानी नइखन स बोलत। मन सिकहरा चढ़ गइल बा। टेढ़िआत कतना बाड़ सन। चोरी आ ऊपर से सीना जोरी !

—"सरऊ, तोहनी चोरी ना करस त बकुली कहवाँ से चलेले ! तोहनी के त केहू कुछ दी ना। का एही छोकरियन का कमाई पर रोज गोश्त-भात उड़ेला ?...." परमा काका टुभकले।

—"त दोसर का। जवना गाँव में एकनी के डेरा पड़ल, तवना गाँव के लरिका-सयान झिगरल ! दू गो पइसा मिलल कि आँख लड़ल।" दारोगा जी कहले।

—'सरकार ! जे कहीं बाकिर...." एगो जवान नेटुआ प्रतिवाद कइलस। ओकरा बोली में खनुस रहे।

—"बोलेब त तूँ फाँसी चढ़ा देबे। कि ना ? बोल, चोरी ना त का करेलस !"

—"सभकर दाता राम हवन सरकार ? ऊहे रउओ के देले, हमनियो के देले। कुछ बेंच-बूँच के रोजी चलत रहेले।

—का बेंच के ?

—सिर दरद. पेट के दरद, खुजली, दिनाय के दवाई, तरे-तरे के तेल ? कान के खोंट निकाल के, गोदना गोद के, खेत-बधार से भीखियो माँग के पेट पोसा जाला; हुजूर !

—का मिलेला एसे।

—दू-चार गो रुपया रोज भेंटाइए जाला। कुछ अनाजो मिलेला। भईंस, गाय आ बकरी-पाठी बेंच के कुछ परापित हो जाला।

—दवा बनावे के कारखाना खोलले बाड़स का ?

—जड़ी-बूटी के दवाई ह सरकार। कुल खानदान में दादा-परदादा का बेरा से चलल आवता।

—"बाप-दादा डाक्टर नू रहे लोग। हरामी के पिल्ला ! आँख में धूरा झोंकेले स। एक नमर के पाजी होले स। कवनो काम जो छूटित एकनी से। जनता के ई सार लोग बुद्धू समझेला। अरे, हम उड़त चिरई का पाँख में हरदी लगाइले। हमरे से उड़े चलल बाड़ लोगिन।....राई-रत्ती के हाल जानतानीं"—दारोगा जी फेरू बरसे लगले—"रात के माल कहवाँ लुकवले बाड़ स।"

—"मालिक ई अछरंग मत लगाईं। हमनी अतना सफाई दिहलीं स बाकिर रउआ...."बुढ़वा नेटुआ हाथ जोर के कहलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—"सफाई का ? कवन चोर ससुरा कुटम्मस का पहिले गच्छेला कि हम चोर हईं !..चल, चल, सभ आपन-आपन नाँव लिखाव स—लरिका-सयान कुल्ह...।" दारोगा जी कहले—"मुखिया कवन बा रे... ?"

—"हम हईं, मालिक !" एगो पचास का लगभग के अधवूढ़ ठाढ़ भइल। लालटेन का मद्धिम रोशनी में ओकर नक्कासी पूरा ना झलकल त ओकरा पर एगो सिपाही टौर्च के अँजोर फेंकलस। तेज रोशनी में ऊ आँख मूँद लेलस, दाँत उज्जर घप्प-घप्प लउकत रहे। नाक उठल, गालन पर दाढ़ी के खूँटी, डाँड़ में साफ धोती ठेहुन तरले लपिटाइल रहे ! देह गठल। मोंछ पाकल। ऊ अपने रवें तनी आगा बढ़के हाथ जोड़ले अधनंगा देह लट्ठ खानी दारोगा जी का आगा ठाढ़ हो गइल !

—का नाँव ह ?

—बलचनवाँ, सरकार !

—रात कहवाँ रहल स ?

—एहीजा मालिक !

—अच्छा सुन हेने !

दारोगा जी ओकरा के लेके एगो कोना में बढ़ गइले। का जाने कवन वात भइल कि बलचनवा गोड़ पर गिर गइल—"ना मालिक, ई ना। गरीबो के इज्जत होला। हमनियो के बहू-बेटी—"

—"बक-बक बन्द कर ससाला ! चल तेंही चल !" एगो डंटा पीठ पर खींच के दारोगा जी खीसि अगिया के कहले—"ई नसीहत देता। ई हमरा के सिखाई !..." चल, चल पहिले हम खनतलासी ले लीं।"

गाँव में से चार-पाँच गो लालटेन आउरो आइल। कुछ जवान लोग के दारोगा जी लालटेन देखावे ला साथ लिहले आ अपना गनती के चार गो सिपाहियन के लेके खनतलासी लेवे बगइचा में तानल सिरकी का नगर कावर चलले !

सभ लरिका-सयान मरद मेहरारु के ऊ एकोर ठाढ़ करा देहले। जवन ना-नुकुर कइलस ओकनी के दू-चार डंटा लगवले। पीठ टोवत ऊ सहमल-समहल आँख से देखे लगले स। एगो-दूगो जवान बेचैनी से कसमसाये लगले स। हर सिरकी में ऊ अपने ढुक-ढुक के तलासी लेवे लगले।

ओमें रहे का ! धन मधे कठवत !! कुछ अलमुनियम के बर्त्तन, कुछ कपड़ा, कुछ अनाज, कुछ गिलट आ चानी के गहना ! जेकरा घर नइखे, रमता जोगी बा, आज ईहाँ, काल्ह उहाँ बसे के बा ओकरा चीज-बतुस के सँगिरहा करे के मोह कम होला। हर सिरकी में से तबहूँ दारोगा जी का कुछ माल मिलिए गइल। जरत चूल्हा लाते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार के बुता दिहले । उनका मन के बात रहे, जवना चीझ के चोरी के समुझ लेस जवना बतुस पर हाथ डाल देस !

एगो सिरकी में ढुकले तले एगो जवान लइकी दउड़ गइल । चूल्हा पर पड़ल केतली बहरे रहे । ओपर लात मरले त ईंटा के चूल्हा भहरा गइल आ गरम अदहन ढरकल त छींटा देह पर आइल । लइकिया गरजल—"चूल्हे पर खनतलासी होता ? लरिका खा खइहें स ? तहरा घर में बाल-बच्चा नइखे ? कसाई कहीं का !"

—मार स्साली के !

—मरब तूं ! ढुकल सिरकी में कि तहार मुंह नोंचनी ! चूल्हा काहे बुतवल ह.... । ओह बेरा से बाबू दादा कहत-कहत जीभ खिया गइल बा । आ ई....

तले दारोगा जी के हाथ चल गइल । डंटा से बँचे खातिर हाथ उठवले ऊ बइठल त माथ पर चोट आइल । अ खोरनाठी उठवलस तले दारोगा जी डांड़ में लटकल पिस्तौल निकाल ले ले रहस ! पिस्तौल से एगो अकासी दगले । सभे जहाँ के तहाँ थथम गइल । जवान जे कसमसा के कुछ कदम बढ़ल रहले स ऊ रुक गइले स । कुछ मेहरारु ओह लइकी का मदत में बढ़ल रहली स बाकिर अब अपना-अपना लरिकन के बाँह धइले आ अपना पाछा लुकवले ठहर गइली स । सिपाहियन के डंटा चले लागल रहे । दू-चार गो पर नीमन बजरल ।

—"तनिको सा तगड़-बगड़ कइल स त सभ सरऊ के भूंज देब । आ तूं जवानी में मातल बाड़ू । आज हम सब जोम तहार झाड़ देतानीं ।....चल, उठ ! ई सिरकी तोरे ह ? चल भीतर, तोरा सोझे तलासी लेब ।" दारोगा जी ओह लइकी के एक लात मारत कहले । गोली चलला से भीड़ जहाँ-के-तहाँ ठमकल रहे । गाँव के ढेर लोग परा गईल । अब तमाशा देखे में कुछ खतरा रहे । ऊ लइकी बइठले रह गइल त ओकरा पाँखुर में हाथ डाल के दारोगा जी सिरकी में घिसिया ले गइले—"चल तोरा सोझे तोर सामान देखतानीं !.."

बहरा सिपाही डंटा भाँजे लगले स । दू-चार गो के मुड़ी फूटल । सिरकी का भीतर पहिले बरतन पटकला के झनक आइल फेर नोचा-चोंथी के धमक । लइकी रोवत रहे, गरिआवत रहे !....कुछ देर में दारोगा जी बहरा अइले-ओकरा के पाँजा में धईले । घींचा-मकुनी में ओकर लुगा खुल गइल रहे । ब्लाउज के बटाम टूट गईल रहे । दारोगा जी चिल्लात रहले—"ले चल साली के । लाद ले जीप में ।.... सभ माल ईहे धइले बिआ ।...."उनका पिस्तौल से एगो अउरी गोली छूटल ।

सिपाही एगो नेटुआ के बान्ह लेलन स आ तीन गो मेहरारुन के धकेलले जीप कावर ले चलले स । दारोगा जी ओह लइकी के घिसिआवत चलले आ जोर से डेंकरले—"बलचनवाँ !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—जी !

—काल्ह फजीरहीं थाना पर अइहे ना त भोरे हम एकनी के चालान क देब। तोहनी के जीअल मोहाल हो जाई।

—हम अबहिंये चलतानी बाकिर एकनी के छोड़ दीं। ई अनियाव होता। बहू-वेटी का इज्जत पर हाथ मत दीं मालिक। रऊये माई-बाप बानी। रऊये ई करब त का बांच जाई ?

—फुटानी मत बतिआव। मिजाज गरम बा। गोली बोझल बा।"

सिपाही जीप में बइठ गइल रहले स। दारोगा जी ओह लइकी के गोद में उठा के जीप में फेंक दिहले। उनका धमकवला पर गांव के लोग चल गइल। नेटुआ नेटुइन के जमातो चार-पांच बांस पर हट गइल।

ऊ इतमिनान से जीप का अगिला सिट कावर बढ़ले। अबहीं ऊ अपना सिट पर बइठले रहले कि गलगलाए के जोर से सबद सुनाइल। अन्हारा में से एगो लमहर देहगर जवान प्रगट भइल। ओकरा हाथ में रामा रहे। ऊ सिरकी तर बिटुराइल भीड़ के अन्दाज क लेले रहे। पछकुरिए हट के अन्हार में ठाढ़ रहे। ओकरा पर केहू के नजर ना पड़ल। सिरकी का भीतर दारोगा जी के करतूत आ अपना बहिन के इज्जत बचावे के कसमकस ऊ देखले रहे। ओकरा खुशी भइल कि दरोगवा हार गइल रहे। लजाइल बिलइया खंभा नोचनीं ! अब ओकरा के ऊ घिसियवले थाना ले जात रहे गीध खानी नोंचे खातिर...

ऊ दांत पीस के अलोत हो गइल रहे। दारोगा जी जइसे जीप पर बइठ के सेल्फ पर हाथ धइले कि गम्भ से रामा उनका गर्दन पर बईठ गइंल। एगो गलगलाए के आवाज भर भईल। खून के पवनारा बह गइल। पाछा अपना-अपना पांजा में एकहगो लईकी के जंतले मने-मने गरमात सिपाही लोग छड़प के बाहर निकलल। एक जाना कूदे में लटपटा के गिरले तले पीठ में रामा के फाल धस गईल। दोसर जाना के लइकिन में से कवनो छूरा मार देलस। हब-डब में कुछ नेटुआ आ गईल रहले स। ओकनी का चहेट के बाकी सिपाहियन के धरे के चहले स बाकिर अन्हार के लाभ उठा के ऊ लोग गांव में अलोत हो गइल।

—"जल्दी-जल्दी ! सिरकी तुड़स !!

बलचनवां के आवाज सुनाइल।

गांव के तमाशबीन लोग हदासे परा गइल रहे। पता ना काल्ह का होखे ! अन्हरे-अन्हरे सिपाही थाना काधर भागल जात रहले स हादसा के खबर देवे। ऊपर अकास में बदरी लदर गइल रहे; अब बरिसे, तब बरिसे। तीनो लईकी चिरइन खानी कांपत सामान सरिआवत रहली स। एगो अपना माथा के खून पोंछत टुकुर-टुकुर अपना भाई किशोर ताकत रहे। ऊ भइयवा अपना रामा पर के खून पोंछत जमीन पर एके हाली ढेर-मनी थूक फेंक देलस "पऽच !...."

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होसिला

रात के गात सिहर रहल बा। पिछला कुछे दिन में कतना ठंढी बढ़ गइल ह। काल्हु भिनसहरा त दूभ का फुलुंगी पर ओस के नन्हीं-नन्हीं बुन जम के चमचम चमकत बरफ के बारीक दाना हो गइल रहे। आजुओ के रात ओसहीं बा। बलु ढेर ठंढी बा। हाथ-गोड़ पाला हेवाल हो गइल बा। माल-गोरू पाझा का अलोता बाड़े स। देह पर चट्टी के झापना बा तबो ओकनी के देह काँपत होई। रोआँ ठाड़ हो गइल होई। कँकुरल होइहें स। गरमी-सरदी से बाचहीं खाती ओकनी का देह में अतना बड़ आ ढेर रोआँ होला। बाकी का करी रोआँ, आ का करी पाझा तर थरथरात देह पर पड़ल ढील चट्ट के ओढ़ना। ई जाड़ सहे मान के बा। अतना जुगुत आ सरजाम का बादो आदमी कपसल लिहाफ में लुकाइल गँठरी खानी ठेहुन मूड़ी में ठेकवले पड़ल बा।.. तबो ई जाड़ बा कि हाड़ में ढुकल जाता; देह में दलदली उपटा देता!

बनवारी लिहाफ के अउरी तान के देह से लपेट लेलन। ऊ मुँह तोप के सुते के कोशिश कर रहल बाड़े। दोसरा पहर ले त कमाल के नीन आइल ह, बाकी अब त कतनो बोनवलो पर, निहोरा-पाता कइलो पर धराई-छुआई नइखे देत! बनवारी के हाड़ो त बुढ़ाइल आ! बूढ़-ठूढ़ का त जाड़ ढेर लगबे करेला बाकी बनवारी त साठ का एह उमिरो मे जवावन के कान काटेलन। देह के काठी अइसन बा कि बुढ़ारी के रेघारी फइलवें से ना लउके। कसल-गठल देह। हरमेस काम में लगल-जमल रहला से साठ का उमिरो में बीस के फुरती भरल बा। बनवारी के कतना सँघतिया पचास लागते ढरक गइलन, कतना जाना बकुली ठेंगत घुसकत बाड़न आ कतना जाना खटिया ध लेलन बाकी बनवारी आजुओ अपना गृहस्थी के जुआ ओहिग कान्ह पर धइले चल रहल बाड़न जेंग तीस-पैंतीस का उमिर में चलत रहस। उनुकर सभ काम डगरत चलता। गाँव के लोग चिहा जाला —चिहाला का सिहाला सभ! बाकी बनवारी के मन आजो काम देख के हुमक उठेला, लपक पड़ेला। मेहनत में जे आनन्द बा, ऊ का अकसरूए कोढ़ी लेखा पड़ल रह के माछी मारे में कबो मिली? बनवारी के मन जब काम में डूब जाला त ओकरा बहके के गुंजाइस ना लागे! लरिकाइयें से बनवारी का कबहुँ कउरा बइठ के चउन करे, गीला बतिआवे भा इरखा-द्वेष में पड़के केहू का बारे में झूँठ-साँच उड़ावे के मन ना कइलस। का जाने कवन रस भेंटाला एमें। ढेर लोगन का मन में ईहे बा, केहू के भल ना देख सकस। मोरी का कीरा लेखा बाड़न स। बनवारी के मन भिना उठल। मन कइलस कि उठ के तनी थूक देस बाकी जाड़ का मारे मुँह बहरा निकाले के हियाव ना पड़ल। देह से कस के खटनी, आ फेरु घोड़ा बेंच के सुतनीं। बेकारे कहल बा कि 'गाय ना बच्छा, नींन पड़े अच्छा!' बनवारी का त जब ले गाय-भईंस के सेवा टहल ना कर लेस, तनी बैलन के पोल्हा-चुचकार ना लेस, खेतन का डँड़ारन पर घूम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के फसल के भर हीक निहार ना लेस तले नीने ना पडे। ओह साल छित्तौली का मेला में बैलन के जोड़ी बिका गइल आ पनरहियन धवलो-धूपला पर जोड़ी ना लागल त बनवारी के हिया छछन गइल, नीन पपनी पर सटे के नांवे ना लेव आ पेट से जइसे भूखे गोल हो गइल रहे !

बाकी आज त नीन अदो-बदो के नइखे लागत। खाली जाड़ रहित त खेपा जाइत बाकी ई रह-रह के आकास के छाती चीरत उड़न जहाज !...एगो-दूगो ना ! ....आधा रात से अबहीं ले बारह गो उड़न जहाज गाँव का ऊपर से गुजर गइल। एक-एक के ऊ गिनलन ह। भिनसहरा होते-होने तीस ले पहुँच जाई का दो।

लेकिन काहे ? कुछेक घंटन में अतना हवाई जहाज ! कबो शायदे अतना जहाज गांव का ऊपर से गइल होखे। कबहुँ-कबहुँ कवनो उड़न जहाज जब भुल् दे उड़ के आकास में भाग जाला त लइकन-सयान के जमात जुट जाले। दिनें में उड़न जहाज उड़ेले सन। रात में अकास करिया चादर तान के गाँव में सुत जाला, ओकरा नीन में उड़न जहाज खलल ना डाल स। दिन खान जब आठ-दस दिन में एकाध हाली आसमान मे आवाज सुनाला लइका आँगन से निकल के दुअरा भागेलेसन आ आंख का ऊपर तरहथी राख के आकास के छाती दरमसत उड़न जहाज के निहारे ले सन ! कतना पुलक से निहाल होके किलकारी भरे ले सन। ओखर में धमाधम मूसर गिराके धान कूटत बहू, खेतन में धान का थान पर हँसुआ दउड़ावत बाप, खेतन में साग खोंटत बेटी, दुआर पर कउड़ी खेलत पूता-सभे एक पल बिलम के उड़न जहाज पर नजर डाल लेला।····बाकी आज आधा रात का बाद से बारह गो जहाज जा चुकल — सभ एके मुहें चीखते-चिल्लाते, कतहीं कुछ गोल माल त नइखे ? सभ पुरुबे मुहें भाग ताड़ स ?

तीनडोरिया कब ना दोल्हल। सुकवा उग आइल। बनवारी के मन बेचैन हो गइल बा। रात के सून-सान समय में हवा का सांय-सांय के चीरत-फारत-धड़-फड़ात हवाई जहाजन के चाले तेज नइखे, आवाजो टाँठ आ तीख बुझाता ! अतना हड़बड़ी काहे ? अतना रात के कतहीं हाली से पहुँचल जरूरी बा ? का हो गइल ! कतहीं फेरु आग लागल, कवनो देस के मन फेरु धनकल ! कतहीं फेरु लड़ाई शुरु हो गइल का ?

बूढ़ बनवारी के मन एह निरने पर पहुँचते कांप गइल। जइसे हृदय का धरती में भूकम्प आ गइल होखे। लगल जनु हवा का हर लहर में हिमालय के सगरी सीत समा गइल होखे।····बनवारी उठ के बइठ गइलन ! बगली से सुरती निकाल के मले लगले। देह पर लिहाफ पड़ल रहे। उनकर मन उड़ के बीस-बाइस वरिस पहिले पहुँच गइल।····ओहियो घरी एहिग पाँख पसरले पखेड़ खानी तेज उड़ स····आ··· लड़ाई के गीध दुनियां का छप्पर पर बइठ गइल रहे। ऊ लड़ाई ? ओकर फल सभे आज ले भोगता ! आज रुपया में तीन सेर कच्चा चाउर बिकता। हर चीझ बतुस के दाम आकास छुवता। महँगाई ओकरा बादे जड़ँया खानी जे हमनी के धइलस से आज ले कतना कुनैन के गोली भसम हो गइल, ई ना गइल।····बनवारी के बड़का बेटवो ओही लड़ाई में बलि चढ़ गइल।····

बनवारी का लइका इयाद पड़ गइल। ओकर हँसत-मुस्कात मुँह सोझा ठाढ़ हो गइल। आंख भरे लागल। पपनी के किनार धार के ना आड़ पवलस। लोर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पातर धार गाल पर ढरक आइल।....ई लड़ाई डाइन हवे, चुड़इल हवे। ना जाने केतना बेटन के रकत पी चुकल, कतना मांग सून कइलस, बाकी तनिको अघाइल ना !.... आजो त बनवारी के छोटका बेटा सेना में बा ! हवाई जहाज चलावेला। एह रात के बनवारियो के छोटका एहिंग कवनो जहाज उड़वले धावत जात होई।....जरूर कतहीं लड़ाई के डाइन हुपासिन लंगटे नाचे लागल बिआ—कवनो देस का माथा पर ब्रह्म पिशाच चढ़ गइल बा !

बनवारी के मन भारी हो गइल रहे। ठंढी के ऊ भुला गइलन। खइनी ओठ तर दाब के ऊ मॅड़ई से बहरा निकललन। बैलन के नाद पर बान्ह के सानी गोत देलन। एगो हवाई जहाज अबहियों उनका मूड़ी पर घर्र-घर्रात रहे।

बनवारी काका का खटरट से नन्हकुओ के नीन खुल गइल। ऊ रोज आँख खुलते एही बेरा काका का पलानी में पहुँच जाला। गप्प-सराका में एक खिल्ली खइनी हथिया के जब अपना मॅड़ई मे वापस आवेला तवे अपना गोरुअन के खूँटा पर से खोल के नाद पर बान्हेला।....झुलुआ बनल खटिया से उतरे में तनी टेम लागल। बहरा अइला पर बुझाइल कि फरीछ होखे में तनी बिलम बा। जनाता कि बनवारी काका आज कुछ सॅंकराह जाग गइल बाड़न। रमजान के मुरुगवा अबही एको हाँक ना पड़लस ! ऊ गवे-गवें चल के काका का पलानी का सोझा आ गइलन। नाद पर बैल सानी हलोरत रहले स। गर में के घंटी हौले-हौले टुनटुनात रहे। ककवा बड़ी मेहनत करेला। एह बुढ़ारियो में मरदे जवानन खानी छउकत रहेला ! बैल कतना बहाल बाड़न स ! पता ना का बरकत बा एह मरदे का हाथ में ! एगो एह नन्हकू के बैल बाड़न स। हरमेस गीदरोइं भइल रहे लेसन !

—'काका sss....!'

—'के हो ? नन्हकू ! आव, आव। बइठ।'

नन्हकू का जनाइल कि काका के कंठ कुछ गील बा, सुर भोंजला मतिन बाबा कुछ हो गइल का ? रात के सुते का पहिले त ऊ इनका से सुरती खाके गइल रहें। तब ले त सबकुछ नीके रहे। फेरु रात में का हो गइल ? कतहीं मन त अनमनाह नइखे। देहे ह, कवन ठेकाना; कब कसरियाह हो जाई।....सुतले-सुतल काका के कवन दरद हरियरा गइल ! अइसन टाँठ मरद के गर भोंजल होखे, पपनी लदरल होखे त जरूर कवनो मरम के बात होई।

काका बैलन के सानी चला के पलानी का भीतरे खटिया पर बइठल रहस। नन्हकू भीतर ढुक अइले आ टो के गोड़तानी बइठा गइलन !

—'मन नीक बा नू काका ?

—हैं, रे मन में का भइल बा !'

—बड़ तड़के आँख खुल गइल ह ! पपनी नीके ना सटल ह का ?

—'बुढ़ारी के नीन के का पूछताड़ हो !.... ल-ल, ई सुरती ल।' नन्हकू का हाथ के टो के बनवारी खइनी दे देलन !

—'देख ना हो, आजु तीने-चार घटा में बारह गो जहाज उड़ के गइल। जनाता कि कहीं फेरू लड़ाई शुरु हो गइल। फेर महाभारत भइल। सियार-कुकुर फेंकरिहें स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नन्हकू बनवारी काका के बात सुन के तनी मउर गइलन। काका के बेटा जब से लड़ाई में मारल गइल, ई ओकर इयाद में जब-तब डूब जाले। कतना मानस। कके बाड़न कि देह-देवासा ठीक बा, काम-धाम में लागल-बाझल रहेलन। गम के पी गइल बाड़े। नन्हकू का बनवारी काका पर दया आ गइल। अतना बरिस हो गइल बाकी दिल पर के घाही ना भरल। नन्हकू खुद हरान बा। अतना उड़न जहाज काहें उड़त बाड़न स? दम ध-ध के आकास जइसे चिचिया-चिचिया के घर में चैन से सुतल लोग के जगा रहल बा।

—'लड़ाई बड़ा बाउर होला नन्हकू!' काका कहे लगलन—'अतना खराब कि का कहीं। केहू के जान मार दिहला पर फाँसी हो जोला; केहू के अत्याचार पर दण्ड दिआला, जेहलि में डाल दियाला। लड़ाई खातिर कवनो कानून ना होला। जे जतने खून पी सकता, ओतने बहादुर बा।

—'के नइखे जानत काका कि लड़ाई ले बाउर दोसर कुछ ना ह। लड़ाई-झगड़ा त नास करबे करेला। केहू हमरा के अपना घर से निकाले के कोसिस करी त हमरा से सहाई? केहू जवान मे ना सहाई! जेकरा त नको जोस होई, हूब होई, जेकरा रग में, खून बहत होई ऊ अत्याचार के विरोध करबे करी। जहाँ विरोध उपजल कि संघर्ष पनपल!'

—बड़ ज्ञान के बात कह ताड़े रे नन्हकू। कहाँ पवले ह?

नन्हकू तनीं झेंपल—'काका, तहरा से हम का छाँटेब। ई त बिरजू भइया काल्ह साँझ खान कहत रहले, उनहीं के कहाव कहतानी। बात हमरा जँच गइल, एसे दोहरा देली ह।

—का कहत रहले बिरजू? कहवाँ खटपट भइल बा रे?

—उत्तर में चीन एगो मुलुक बा। उहे टंट बेसहाता। अक्खड़ता। नेंत खाम राख के कतहीं इयारी चलेला! बिरजू भइया कहत रहलन हं कि चीन एगो नक्सा बनववले बा जवना में भारत के लाखन विगहा अपना देश में देखवले बा।.... अब चाहत बा कि बन्दूक का नली से ओकरा के दखल कर लीं। एही के झंझट शुरू बा। दूनू ओर से गोली-बारुद चलता, जवान चउकस होके भीर गइल बाड़न!'

—'ओ ऽ ऽ ...।' बनवारी का जइसे विश्वास ना भइल।

—'नक्सा में दिखवला से ऊ धरती ओकर हो जाई काका?' नन्हकू पूछलन।

—हरगिज ना। सोच ना, हम सउँसे गाँव के नक्शा बनाईं आ गाँव भर के धरती आपने लिख लीं त गाँव भर के लोग हमरा के जोत लेवे दीं? हम चाहे जेतना सँवगर होखीं, गाँव का एका का आगा हमार एक ना चली। झख मार के हमरा नवहीं के पड़ी।

बनवारी काका का सुर में जोस रहे। 'हरगिज ना' उनहीं के आवाज ना रहे, समूचे भारत के सुर रहे!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'बड़ देर हो गइल काका। बैल हुँकरताड़े सन। अब त पह फाटल। तनी देर में अँजोर हो जाई। देख कि बिरजू भाई के रेडियो आजु भोरे का हाल बोलत बा।

नन्हकू उठ गइलन आ अपना पलानी तर जाके मालन के खुँटा पर से उपटा के नाद पर बन्हलन आ लेदी गोत देलन। बनवारियो उठ के लेदी लगवले। ई बैले त उनकर हाथ-गोंड़ बाड़न स। एकनिए का बुता पर नू ई कूद फान करेलन, एकनिए क कमाई पर नू एह बुढ़ारियो में बनवारी जवान बनल बाड़न! बनवारी देर ले ठाढ़ होके बरदन का पीठ के सुघुरावत रह गइलन। अनबोलता जीवो का नेह के पहिचान होला। ऊ आउरो घुसुक के बनवारी से सट गइले सन। नेह-छोह आ प्रेम-मुहब्बत के परख त कुकुरो—बिलार क लेला त का इन्सान ना कर सके ?.. बनवारी का लागल कि इन्सान अपना आत्मा के मुँह जब जाब देला त ओकर विवेक मर जाला, ओकरा आदमियत के दम टूट जाला! एह हालत में आदमी खुदगरजी में बउरा जाला—ओकरा खाली हमहीं हम लउकेला, तूँ के इचिको सुमगुम ना भेंटे। इन्सान हैवान बन जाला, बेलकुल दनवाँ-दईत! लड़ाई त एही खुदगरजी के लहोक ह, धाह ह जवना में आदमियत जर के खार हो जाले!

बनवारी के मन चीनपर खूझ गइल। ई केहू के सनचित ना रहे दिहन स। भारत शान्ति चाहत बा, अपने ध्यान में रमे के चाहता, ई के नइखे चाहत बाकी दुनिया के अउर देश बनं देव तब नू! जवाहर लाल जी कतना पता के बात कहेलन कि 'हमनी का लड़ाई ना चाहीं, शान्ति चाहीं। कवनो ममिला अइसन नइखे कि बतिआवल जाव, बुद्धि विवेक से काम लिहल जाव त ना फरिया जाई!' ई सभ सुन के बनवारी का बड़ा नीमन लागेला। लड़ाई ना होइत त फेर कवनो बनवारी का बड़कवा के खून नानू होइत? बाकी जब केहू बहू-बेटी का इज्जत पर हाथ धरी त ओकर बाँह उखारहीं के पड़ी, ओकर आँख फोड़ देब के पड़ी।

घाम उग गइल। बथान के काम ओराए लागल। बनवारी के मन काम में त लागल ना बाकी काम से भाग के आदमी जाई कहाँ? देह धइला पर त देह के धरम निबाहहीं के पड़ी। उड़न जहाजन का उड़े के गति बढ़ गइल रहे। वातावरण में एगो बेचैनी ब्याप गइल रहे!

जब बनवारी खाना खाए घरे गइलन त अँगने में चम्पा आकास काबर तिकवत लउक गइल! एही सब के अनेसा से बनवारी के दिल धकधकात रहे। चम्पा उनुकर बेटी हिय। सयान हो गइल बिआ। एकरा सादी के चिन्ता बनवारी का मूड़ी पर सवार हो गइल बिआ। अब त छोटनो कमात बा! जोड़-जुगुत लायक बर मिलते तय क देवे के बा आ हाथ खोल के खरच करे के बा। मुट्ठी सकेत राखल ठीक ना होई। कवन दू-चार गो करे के बा। एके गो त बेटी बिया!

—आज अतना उड़न जहाज काहे उड़ता बाबूजी?' चम्पा पूछली।

—'का जाने बेटी! हमरा से पूछ के उड़ता कि हमहीं देस के मालिक हईं रे। हम कवनो दिल्ली से आवतानी। सानी-पानी क के बथान से चलल आवतानी भूख लागल बा। ले आव ना कुछ खियाव!' बनवारी हँसे के कोसिस कइलन। सवाल टार देलन। जान के कि एहुनी के जान मत सूख जाव! लड़ाई-भिराई के बात कवनों नीक ह कि सुनावल जाय! अनेरे घबड़ा जइहन स!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—सउँसे गाँव हल्ला बा आ रउवे नइखी जानत ?

—का हल्ला बा रे ?

—का दो चीन चढ़ आइल बा। ओकरा के भगावे खातिर आपन सेना हवाई जहाज से जा रहल बा। रात कादो जवाहर लाल जी के हुकुम भइल रेडियो पर कि ओकनी के बाहर निकाल के फेंक देहल जाव !

ओह त चम्पो जानतिया; बहुओ जानत होई। गाँव के हर आदमी जानता। शहर के पूछहीं के का बा। तबकी लड़ाई मे त एगो डर समा गइल रहे। आदक रहे। अबकी उदासी भर बा। इज्जत बड़ चीज ह। ओकरा के बचावे खानी जे कुरबानी दियाय कम बा ! बहू-बेटी, धरती के रक्षा त धरम ह। भारत त धरमे के देश ह। भोरहीं से बनवारी क मन जे उदासल रल, चिन्तातुर रल से कुछ थांगी पाके बिलमल बा।

चम्पा भोजन परोस के ध गइली। बनवारी पीढ़ा पर बइठ के जीमत रहले। गवें-गवें कवर उठत रहे आ दिमाग में बड़का बेटा के बात बदरी लेखा घुमड़त रहे ! कइसन गभरु जवान रहे तिरलोकी ! लाम काठ, गठल-गदरल देह, बाँह में जइसे हाथी के बल होखे ! एही लड़ाई के बलि चढ़ गइल ऊ। मरबो कइलस त बहादुरी से, सिंह खानी दुसमन के मारत। अंग्रेज बहादुर ओकरा बीरता के सरहलस। तिरलोकी त दोसरा खातिर लड़त में मरल, आज त अप्पन सवाल बा, अपना देश के सवाल बा।

खाना पूरा खाइल ना गइल। बनवारी हाथ बरा के उठ गइलन आ हाथ-मुँह धोके बिरजू का दुआर कावर चल देलन। गाँव के एगो चक्कर मार देलन-अनसोहातो। सभ जगे एकेगो चरचा रहे, एके गो बात रहे।

साँझ झुलफुला गइल। हाली-हाली सभे माल-गोरु के काम निबुकावल। अइसहूँ गाँवन में सवेरहीं भोजन बन जाला। आज दिन अच्छते धुआँ उठल आ रसोई बन गइल ! जब टेम भइल त सउँसे गाँव बिरजू का चौपाल म बटुरा गइल। आँगन में कुछ मेहारु आ दालान में बूढ़-जवान-लरिका।....रेडियो से खबर होखे लागल। सभ चुप सुनत रहे जनुक एक ह गो शब्द लोग पी रहल बा।

'घमसान लड़ाई चल रहल बा। दुश्मन हजारन का संख्या में हमला कर रहल बा। आपन बीर-जवान डट के मुकाबला कर रहल बाड़न।....एक का बाद एक हमला भइल, बाकी सभ नाकामयाब क दीहल गइल।' सभे समाचार सुनल, आ भारी मने उठ के चल दीहल। आज गप्प-सराका ना भइल आ ना कवनो फुसुर-फुसुर।

गाँव चुप हो गइल रहे बाकी भीतरे-भीतरे सुनुगत, रहे। सभे के ध्यान ओनहीं लागल रहे। माँ, बाप, बहिन, भाई, बीबी सभे जागल रहे। केहू छप्पर निहारत, त केहू अन्हार के घूरत, केहू सपना मूँदले, त केहू चुपचाप बइठल। सोच सभका रहे।

बनवारियो का नीन ना रहे। उनका में महतारी के ममता जाग उठल रहे। अगर छोटन के माई रहिती त आजु ओकरा कइसन बुझाइत ?...ना, ना ऊ काल्हें एगो चिट्ठी लिखिहन छोटन का नावें। छोटन....

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी लिखियो के बनवारी के दिल धड़कत रह गइल। गाँव रोज जोसियात जात रहे। लड़ाई खाती अइसन जोस बनवारी ना देखले रहले ह। जबावो आ गइल छोटन के ! चिट्ठी खोलत बनवारी के हाथ काँपत रहे। बाकी चिट्ठी में भुँभुर भरल रहे। 'राउर चिट्ठी मिलल। अतना लाज हमरा कबहूँ ना लागल रल। हम राउरे बेटा हईं ? बड़ा चाव से, हुलास से खोलनी चिट्ठी बाकी पढ़ते सन्न रह गइलीं। मन धिरकारे लागल। ओकर टुका-टुका क के उड़ा दिहनीं। केहू देख लीत त कवन मुँह देखइतीं। बाबूजी, के अमर बा इहाँ ? के अमरित पी के आइल बा ? मरे के जब बरले बा, त घर में कुधुर-कुधुर के, रोग से बिल-बिला के मुअल का मुअल ह ! मउअत का जब आवे के होई त ओकर हजार गो राह बन जाई। ऊ रोकाइल ह केहू से आजु ले ? त फेर डर का ? हम आपने काम त करत बानी। देश का हमरा रकत के जरूरत होई त ले ली। ओकरे हवा, पानी आ अन्न से नू बनल बा ई देह। आज चम्पा का इज्जति पर धावा बा, माधुरी का इज्जत पर चोट बा—हम कइसे सहीं... ।'

चिट्ठी रोआँ गनगना देलस। पूरा पढ़ ना पवलन। आँख भर आइल। टप-टप लोर चुए लागल। भावना में बहके ऊ चिट्ठी लिख देलन। मोह-माया के जंजाल अकिल के ढाँप देला। बनवारी अँगुरी से लोर पोंछ देलन आ चिट्ठी के सरिया के बगली में ध लेलन।

—'का लिखले बाड़न भइया ?' चम्पा केवाड़ी का लगहीं ठाढ़ रहे। ओकर आँख भींजल आवत रहे। बनवारी का बिसर गइल रहे कि चम्पा उनुका के चिट्ठी पढ़त देख रहल बिआ आ ओकरा पाछा बहुओ ठाढ़ चिट्ठी के तिकवतिया। ऊ झिझकले। का ई चिट्ठी बहू के दे दीं। अपना कमजोरी के पोल खोल दीं ?

—'सब हालचाल नीके बा। ले ई चिट्ठी अपना भउजाई के दे दे।'

चम्पा चिट्ठी लिहली तले बहरा बिरजू बाबू के बोली सुनाइल—'काका बाड़न ?'

—'आव, आव। कइसे भुला पड़ल ह हो ? काका उछह के बोलवलन।

—'चल ना तनीं। बी० डी० ओ० साहब आइल बाड़न। गाँव का लोग के एगो बटोर करे के बा।' बिरजू आके खटिया पर बइठत कहलन।

—'काहे के बटोर हो बिरजू ?'

—'सेना का जवानन खाती हथियार आ गरम कपड़ा कीने बदे रुपया-पइसा चाहीं। एही खाती सभका दान देवे के बा। जवाहर लाल जी के अपील भइल बा। राजेन्द्र बाबू पटना का गाँधी मैदान में भइल सभा में दहरले बानीं। जवान मोरचा पर लड़त बाड़े सन। हमनी का हर तरे से ओकनी के मदद करे के बा।' बिरजू बाबू समुझावत कहले।

—से त बा। एकरा बिना कइसे चली। सभे तनी-तनी दी त अम्बार लाग जाई—रुपया-पइसा के, गहना-गुड़िया के आ अन्न-कपड़ा के। एक के बोझ, दस-पाँच के लाठी। बाकी गाँवा-गाईं से असूलल पइसा का साँचो जवाहर लाल जी ले पहुँची ?' बनवारी पूछलन।

—'मतलब ?'

—अरे, अब पहिले के जमाना त बा ना। सुराज का मिलल, सभ का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उजाह छटक गइल। पहिले केहू चन्दा के रकम छूके आकबद ना बिगारत रहन ह बाकी अब त लोग पूरा-के-पूरा हजम क जाता। केहू का तनिको मोह-माया नइखे। सभे लूटे-खसोटे-सहोते में बिसभोर भइल बा। ओह घरी के सपना एक का बाद एक भहरा गइल। जवना अफसरन,का बिना माल ले ले एक्रोगो काम ना करे के आदत पड़ गइल बा, ऊ का मुफुत में बिटुराइल माल के हपच ना जाई ?'

—'से त बा काका। ऊपर से नीचे ले सभे चोरे हो गइल बा। अमला-फमला के के कहो ई खद्दर पेन्हले नेतवन का मारे त अउरो बसा गइल बा ! जहाँ एमेले-मंत्री तक एनहीं लपकता ओजा भ्रष्टाचार बड़बे करी। बाकी संकट का घड़ी में त कुछ जानियो के माछी लीले के पड़ी। ....अवहीं सवाल घूस के नइखे, दू-चार गो चोट्टा वनावं के चहिहन स तबहूं हमनी के पछकुरिए हटल ठीक ना होई। ढेर-से-हेर जरूर जवानन ला खरचा होई—ओकनी का दवा-दारू, कपड़ा-लत्ता.... ।' बिरजू बाबू आगे कहलन।

—चल, चलहीं के पड़ी। चीलर का डरे धोती खोल के ना नू फेंकाई। आजु ना कालिह फेरु देस जागी, माटो सुगबुगाई त अतहते करे वाला नेतन आ अफसरन के कान धके उतार फेंकी कुर्सी पर से। ई माटी तनी धीरजा से काम ले ले। सहे ले। सहे मान क ना रह जाय त फाट पड़े ले आ आग उगले लागेले। ओमें सब बहेंगवा ससुर लोग जर-धनक के राख हो जाला—गोंसाई जी कहले बानी—

जब-जब होय धरम के हानी
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी••

—ई त धरम के नू देस ह काका ! ईहाँ देवता लोग जनमे खाती तरसेला...'

—से का जाने। आजादी का बाद त जरूर देवता लोग हरक गइल होई। एह नरक में बोलवलो पर अब ना आई लोग। मनइए न देवता मानेला हो। जहाँ मनई के मनई ना बूझल जाई ओजाँ के रामे मालिक बाड़न।... आज त सवाल बा लड़ाई के, लड़ाई में अपना जान से खेलत बहादुर जवानन के मदद करे के,...चल ई त पुन्न के काम बा, कइल जाव।'

दूनू जाना चल देलन। गाँव का सटले बहरा मन्दिर में बइठका जमल रहे। सभे बटुराइल रहे। रास्ता में बड़-बतकही चलत रहे। कतहीं से घूम के बात मोरचा पर आ जाव। अचानक बिरजू पूछले—'काका, छोटन के चिट्टी आइल हवे नू ?

—'हँ, आजुये आइल ह।' कहके काक सब वृतान्त सुना गइलन। छोटन आ बिरजू संघतिया ह लोग। बड़ा हितारो ह लोग में। सब बात सुन के बिरजू लपक के काका के पाँव छू लेलन —'बड़ बहादुर ह छोटन भइयवा। गाँव के ऊ त शान बा।'

सभे बटोर में पहुँच गइल। सभा होखे लागल। बी० डी० ओ० साहब कुछ बोललन। मेधा पूरावल लोग। मिटिंग में बोलल धरम ह। एसे कुछ लेक्चर भइल आ अन्त में बिरजू खड़ा होके भूमिका बन्हला का बाद कहले—'एह गाँव के शान हवन बनवारी काका। बड़का बेटा त दूसरका विश्व युद्ध में बहादुरी से लड़त काम आइल आ छोटका बेटा छोटन भाई आज वायु सेना में रह के धरती के लाज बचावे खाती दिन-रात एक कइले बाड़न। आज का दान के समहुत कके करिहन।'

छोटन का चिट्टी के बात सुन के त सभे अतना ताली पीटल कि बनवारी के छाती फूल गइल, मूड़ी पर के पाग दू बित्ता अलग गइल ! जब बनवारी ठाढ़ भइलन त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेर एक दाईं थपरी बाजल। उनुकर मन हुलस गइल—'हम त जान लड़ा दीं बेटन खाती। छोटने हमार बेटा ना ह, आज जे-जे सीमा पर लड़ रहल बा, जूझ रहल बा ऊ सभे हमार बेटा बा, एह धरती के लाल बा।··· हम साधारन किसान हईं। हम एह फंड में एक सै एकावन रुपया देतानीं।···लिख लियाव।'

ताली फेर बाजल। थपरी के गरगराहट अवही ओराइल ना रहे कि एगो बारह बरिस के लरिका दउड़त—हाँफत पहुँचल। ऊ बनवारी के पड़ोसी पारस के बेटा रहे।

—'का ह रे बबुओ ?'

—चम्पा बुआ भेजली ह। ई सोना के हँसुली चाची जी भेजलीं ह कि एकरा के बेंच के हथियार किनाव··· । ई उनुकर होसिला बा।'

···आ लोग अकचका गइल। जे ताली बाजल कि सउँसे टोला गूँज गइल। बनवारी त रोवे लगले। आनन्दित होके। आज वहू बनवारिए के ना, छोटने के ना सउँसे गाँव के इज्जति राख लेलस। जहँवाँ वहू बेटियन में ई हुलास रही, ई होसिला रही ओने ताके के हियाव केकर बा। लोग ताली बजावत रहे आ बनवारी के लोर में सउनाइल बड़का-छोटका के रूप का जवरे वहू के रूप छछात ठाढ़ हो गइल रहे। उनुकर हाथ पाकल मोंछि के सुघरावत रहे। आँख से ढरकत लोर के उनका चिन्ता ना रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दल-बदलू के डायरी

(संपादक जी,

दल-बदलू जी का डायरी से तारीख निकाल देले बानीं । नांवे में कुछ हेर-फेर बा। जल्दी में तीर चोख ना बनल ह। एगो बेपढ़ल आदमी कइसे लिख सकता डायरी ? जनता आज सब बुझतिया । राउर ई सवाल बेकार बा ।

ई डायरी । हमरा राजधानी जात में एगो थर्ड क्लास का डाबा में मिलल । का जाने कइसे गिरल रहे । एह नोट के भी छाप दीं । अगर ई केहू मतरी से मिलत होखे त ऊ हमरा पता पर लिख के आपन डायरी मंगा लेस । चूंकि एकरा सुरु के पन्ना फाटल बा आ बीच में कहीं मंतरी जी के नांव नइखे-एहीसे हम ई गुस्ताखी कर रहल बानी ।)

☐ आखिर एलेक्सन खतम हो गइल । दू महिना से धुरा फांकत-फांकत कंठ छिला गइल बा ---अइसन ना होखे कि कहीं फेफड़ा कमजोर हो जाय आ एकर धुकधुकी बेदम होखे लागे । राजधानी में पहिला काम होई डाकदर से अपना देह के पूरा रपट ले लेहल । ····सक हो जाय, त ओकरा से निपट लेवे के चाहीं ।

कवन-कवन करम ना करे के पड़ल ह । लोगो बड़ चल्हांक हो गइल बा । ······सन एकावन आ सन्तावन का एलेक्सन मे केहू का ई ना बुझाय कि भोट का ह आजादी मिलल त एगो बकसा में कागज के पुड़िया डाल देला से राज कइसे चली ?-- बाकिर अब सन सड़सठ में जवना का देह पर भगई नइखे ऊहो अपना के लाटे बूझता । सुर तानपुर के चेंथरुआ कइसन छाती में गोली दगलस कि मत पूछीं । जइसे हम मोटर ठाढ़ कके हाथ जोरले ओकरा लगे पहुंचलीं कि ऊ ताबड़तोड़ पलानी का आगा खूंटा में बान्हल कुक्कुर के पीटे लागल । ऊ जतने मारे ओतने गारी देवे । भ तर से त हमार अस मन करे कि सरऊ के गोली मार दीं भा मार कोरा चूतर पर के खाल खींच लीं बाकिर तुरन्ते मुसकाके कहे के परल – 'काहे भाई जी' कुकुरा का कइले बा ?"

'एह ससुरा के मत पूछीं एमेले साहब । ई सरवा हर पांच बरिस में एक हाली आवेला आ कवरा खाके जे टकसेला से फेर अइबे ना करे । कवरा हम देइलें दुआर के अगोरिया के कि जवार भर का गली-गली में छिछिआए के····।'

बात त हम बुझनी बाकिर लोहू पीके रह जाय के परल । जरूरत पर गदहो के बाप कहे के पड़ेला । हें-हें-हें कके हंसके चेथरू के पीठ ठोकलीं—वाह भाई !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हूँ त रतन बाड़ !! अबकी पंचाइत में तहरा सरपंच बने के चाहीं।' तिकड़म लाग गइल। कतनो लोग बिदुकल बाकिर हमरा चाल के काटो के ? जहाँ-जहाँ जाति के भोटर लोग ढेर रह, उहाँ-उहाँ बीस गो नवहा छोकरन के जमात बटोरलीं आ जबले दोसर लोग खा-पी के, धराऊँ जामा-जोरा पेन्ह के 'बूथ' पर वोट दवे आवस तले लोग के कुल्ह भोट पार ! बोगस के महिमा ह कि हारत-हारत हम दस हजार से जीत गइलीं।

····अब पाँच वरिस ले हम जे चाहब से करब। जतना जाना हमार खिलाफत कइले ओ लोग का छाती प मूँग ना दरलीं त 'फेर हमरा नाँव पर रउआ कुक्कुर पोसब।····

काँगरेस से बहुत लव लगवलीं बाकिर गोटी ना बइठल। अन्त में ठगेन्दर जी कहलीं कि ताकत का बाड़, ताल ठोक के भीड़ जा। तहरा छेत्र से नकफोंफा जी का टिकट मिलल बा आ ऊ ढोलक जी के आदमी हवन। उनुका जरूर हारे के चाहीं चाहे जे करे के पड़े ! ना त हम 'मुखमंतरी' ना हो सकब।'

काँगरेस त हम छोड़ देहलीं आ काँगरेसे के बडका नेता ठगेन्दर जी का किरपा से मुफुते में एमेले भी हो गइलीं। हर्रे लगे न फिटकिरी, रंग चोखा होय ! अब राजधानी चले के चाहीं।

☐ मजा आ गइल। काँगरेस अपने आप में धनक गइल। गद्दी पर बइठे का ताक में सभ बड़कू लोग एक-दोसरा के समरथक उम्मीदवार के जे पत्ता काटल सुरू कइल लोग कि अपनो पतंग अझुरा देहल लोग। घर फूटे, गँवार लूटे। चलीं काँगरेस छोड़ला के मोह नइखे। ठगेन्दर जी, नकफोंफा, गोबर गनेस जी आ मीठू पाँड़े सभकर मुँह लटक गइल बा। काँगरेस के सरकार ना बनी। बिरोधी दल के सभ लोग मोंछ पर ताव दे रहल बा।

आज हर पाटी के नेता दिल्ली से इहाँ आ गइल बाड़े। कोरसिस हो रहल बा। रूपरेखा बनता। गद्दी मिले के चाहीं—जनसंघ, कम्युनिस्ट भा संसोपा ! कवनो जमात होखे, कवनो रंग के टोपी होखे—उदेस एक बा—कुर्सी, गद्दी !!

☐ ···संयुक्त विधायक दल बनल ह। काँगरेस के छोड़ के सभे मिल गइल बा लोग। सरकार चलावे खातिर मेल जरूरी होला। नेता के चुनावो हो गइल। भरमाया जी बहुत पहिलहीं से पैंतरा में रहले ह। बहुत सहले बाड़े। दउरत त हमहूँ बानी। देखीं लहत बा कि ना ? हम पढ़ल-लिखल नइखीं। दसकतो करे ना आवे। बाकिर मंतिरी होखे खातिर कवनो इसकूल के पढ़ाई ना चाहीं, जिनगी का कालेज में पढ़ल होखे के चाहीं—जे हर तरे के रंग पहिचान सके, चाल चल सके ! गोटी बिछावे में जे माहिर होखे !!

☐ ····बाजी हार गइनी। काल्हि ले उमेद रहे, माथे मउर चढ़ जाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकिर सोभापति के गोटी लाल भइल। ऊ हाला करेला। जात-जात चिलाके हो गइल मंतिरी। ओकरा से पुरान होके हम टापत रह गइलीं। ई हमरा संगे अन्याय भइल ह। कवनो का अकिल नइखे! सब चोर बाड़े स। हीरा माटी में पड़ल रह गइल, सीसा उठा के अलमारी में सजा देहल गइल।

काल्हि ले संविद सरकार में फँदा रहल बाकिर अब ई बडल बुझाता। एमे जोग्यता के कवनो पूछ नइखे। जे लोग कहत रहल कि हमरा गद्दी आ सत्ता से मोह नइखे ऊ लोग गाली-गलौज आ थूकम-फजीहत कके कुर्सी छीन लेहल।

□ ....रमा जी का हमरा सोझा वाला फलेट में जगे मिलल बा। छरहर बदन, गोर चाम। केस में जइसे भँवरा गुंजरेला। बात-बात में हँस देली। मुसुकी त अइसन छोड़ेली कि मन के पोर-पोर गमक उठेला। ई कांगरेसी माल हई। हमरा छेत्र से सटले दक्खिन का छेत्र से चुना के आइल बाड़ी। इहवाँ भी पड़ोसिने बाड़ी।

हमरा के देखते रमाजी का गाल पर गुलाब फुला जाला! आँख में अड़हुल का फूल के लाली छलक आवेले। लरिकाईं से ही हम कसरत करीला। पचास का उमिरो में देह के चूल ढील नइखे। केस अधपक बा। रमा जी अबही पैंतीस से ढेर के ना लागस। अंग के कसाव कसमस बा। बतिआवत में अँचरा सरक-सरक के गिर जाला आ बिजुरी लेखा गोल घंराई मन के चौंधिया देला।

रमा जी के कइ हाली हम अपना इहाँ नेवता देले बानी। कबहीं खाना पर, कबहीं चाय पर। उनुका इहाँ भी बहुत मोका मिलल बा। हम चाहतानी कि ऊ कांगरेस छोड़ के संविद मे आ जासु। सविद में केहू महिला इनका तेज का बरोबर नइखे। भरमाया जी भी बात कर चुकल बाड़े। भरमाया जी मतरी के पद भी देवे के कह चुकल बाड़े। रमा जी के भी मन लुसफुसात बा। देखीं का होला? उनुकर कहनाम बा कि एक हाली हम आउर कांगरेसी नेता लोग के देख लवे के चाहतानीं।

□ ....कांगरेस से चार जाना बेपेनी के लोटा अइले आ सविद में मंतरी बन गइले। इहाँ झाड़ गल गइल बाकिर उपमतिरी के जोग भी ना लागल। एह एहवात से त राँड़े नीमन? भरमाया जी के हम कह देहलीं ई जनता के प्रति धोखा बा, कारज-करता का मुँह पर थूकल ह।' बाकिर ऊ एकरे के सिद्धांत कहतारे! एकरा बेदी पर ईहे बकरा बनि हं। दल-बदल के आवे वाला के तुरन्ते इनाम मिलता। दल में ईमान बाँचल ना। खाली बिसवास लेके केहू चाटी?

□ सोभापति जीउआ बना लेलस। छवे महीना में दू लाख पर त हाथ फेर देलस। गाँवे कोठी त ऐमेले रहे तवे बनवलस। पटना में तीन किता मकान के जमीन लेलस। एगो मेहरारू का नाँव से, आ दोसर बहनोई का। एने ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बन्धी लोग का नीमन ठीका मिल गइल। सब चानी बा। अबकी चुनाव लड़ में खरचा ढेर पड़ गइल। सब मार छक माल चभलें स। हमरा बुझात नइखे कि का करीं ?

नेता लोग रोज भासन देता—'खजाना खाली बा।' राज मे अकाल मुँह बवले बा। धरती फाट गइल बिआ। पीठ से पेट सटल बा। दाना दाना मोहाल बा। बिदेस से ढेर भीख के अनाज आ दूध आइल बा। नीमन-नीमन कपड़ो बँटाइल ह। अखबार में रोज फोटू छपल। खिचड़ी खाए खातिर इसकूलन पर गाँव-जवार के सैकड़न मरद-मेहरारू बिटुरा जातारे आ आपस में काँव-कुच करता लोग जइसे भोज का अन्त में फेंकल जूठ पत्तल पर कुकुरन के जमात वार करेला।

बाकिर राजधानी में पता नइखे चलत। एमेले का सब सुबिधा बा। रासन छाँटल मिलता। दूध-चीनी सब पूरा बा। घरे एही से ना गइलीं हँ। सुनली हँ कि चुनाव छेत्र में एको बुन पानी ना पड़ल। लोग अलला के रहि गइल ह। बाकी हम का करीं ? मंतिरी रहतीं त कुछ ढेर रुपया बटवइतीं। एसेम्बली म एगो 'सवाल' पुछलीं। बजट पर बोलत म एकर चरचा कइलीं आ 'असथगन' परस्तावो ले आवे के कोरसिस कइलीं। बाकिर कुछ ना भइल। उलुटे अनाज उगाहे का चक्कर म बाबू निहाय सिंह किहाँ घरतलासी हो गइल। ऊ बोमिआइल आके हमार हजामत बना देले। बेचारा ठीके कहत रहे। जे सरकार, खून-पसेना एक कके कमाइल 'डढ़ हजार मन' अनाज ओकरा घर से छीन लेलस, ओकर लास त नोंच के 'गिद्ध' का खाहीं के चाहीं।

□ ····आज आठ बजे रमा जी का लगे गइल रहली हँ। कोठरी में एके सोफा पर बइठके राजनीति के बतकही होत रहल। आज ऊ परी खानी सुन्नर लागत रहली ह। उनुकर बिचार बा कि हम संविद छोड़ दीं। रहले से का मिलता ? ततकाल लाभ ई मिली कि काँगरेस का ओर से जे 'अविसवास के बात आई ओमें संविद के सरकार गिर जाई आ हम मंतिरी बन जाएब। जवना खातिर काँगरेस छोड़ के अइलीं, संविद में जवन भाग · ना मिलल, ऊहे बात हो रहल बा।

मजा के बात ई कि अचानके लाइट बुता गइल। चारू ओर कुच-कुच अन्हरिया। रमा जी अउरी नियरा घुसुक अइली। बेलकुल देह से सट के—'देखीं कइसन अन्हार हो गइल। हमनी का भाग लेखा। का सोचतानी रवाँ ?' ई कहते रमा जी के हाथ हमरा कान्ह के छुअलस। ऊ गरम-गरम रहे। हम गवें से उनुकर हाथ ध लेनीं। तले भक् से अँजोर हो गइल। उनुका पर लाली दउड़ गइल। बाकिर ऊ हमरा से कबूल करवा लिहली कि हम संविद छोड़ दीं। एसे उनुको लाभ होई आ हमरो। काँगरेस अगर सरकार में सामिल होई त उनुकर नेता ई पक्का बचन देले बाड़े कि रमा जी अबकी 'मंतिरी' बनिहें। जतना लोग संविद छोड़ के आई, ऊ सभे सरकार बनाई। फेर रमा जी का साथ के मजा मिली से अलगे बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम तेआर बानी। लोग औरत खातिर का ना करेला—आल्हा-ऊदल बनेला। इहाँ त 'कुर्सी' के समाँ भी आ डेरा पर 'रमा' भी। संविद में का अब धोध घइल बा ?

☐ सभ लोग जानत रहल कि संविद सरकार गिर जाई। एकरा बहुमत नइखे। बाकिर सरकार के मतिरी लोग 'कुछ दिन आउर' का मोह में विधान सभा के बैठक ना करे चाहत रहल। छव महीना पर बइठक भइल आ नाटक सुरू हो गइल। राज्यपाल का भासन पर बहस 'राम-राम' कके पार हो गइल। राज भर के मुस्टंड लोग आपन बलम-बरछा आ लाठी सम्हरले दूनू ओर से राजधानी में बिटुरा गइल लोग। रोज नारा लागता। कै जग मुफत भोजन के होटल खुल गइल। राज म कतहीं अकाल बा—ई बुझात नइखे।

☐ हमरा बगल के एमेले 'पंडुक जी' तनी मुँह दुब्बर पड़ले। उनुका के संविद के लोग कतहीं ले जाके तीन दिन ले लुकवल रहल। उहां मतिरी बने खातिर संविद छोड़ रहल बाड़े। पुलिस खोज के ऊपर कइलस। सहर में १४४ लागू बा। कहू भासन ना कर सके। बाकिर एसम्बली का आगा पुलिस मंतिरी रोज भीड़ बटोर के भासन दे तारे। परसों गोली चलल। आज कांगरस के एगो एमेले भवन में बहोस हो गइले त उनुका के अस्पताल ले जाए में मार-पीट हो गइल। राज के पुलिस मतिरी का कुछ चोट आ गइल। हम मूरख एमेले हई। मूरख मान कम पढ़ल-लिखल। बाकिर मंतिरी का लोभ खातिर 'गुंडई' करे में हम नइखी कसारआत। आउर लोग से बीसे बानीं।

☐ बिहान अबिसवास पर भोट होई। हमरा बीस हजार नगद मिल गइल। रातके रमा जी एहिजा रहिहें। हमरा अगोरिया में। आदमी के कह देल बानी कि चाहे जे होजाव, रात के केहू आ जाव, केंवाड़ी ना खुली। खाली रमा जी के बाट जोह तानी।…ऊ आ रहल बाड़ी।

☐ …संविद के सरकार गिर गइल। बिरोधी दल के काम ह राज-पाट करे वाला दल का आदमिअन के तूरि के आपन पार्टी लाल कइल। कांगरेस बीस बरिस ले 'सत्ताधारी' दल रहल। अचानक एह राज्य में ऊ १९६७ म 'विरोधी दल' हो गइल। ओकरा सासन में राज नमूना बन गइल। अफसर भा किरानी सभे काम से देह चोरावे लागल, जनता घूस के मतलब पूरा समुझ गइल। सभ पइसा बिना बेराम पड़ले करमचारी लोग डाकदर के घुसहा नुस्खा पर उठा लेहल। मंतिरी लोग के नतुहा-देआद बन गइले—कोठी पर कोठी बन गइल। जाति के रंग जमल। लोग बउरा गइल। सत्ताधारी दल का करतब के पूरा पालन भइल। संविद के सरकारो ओह सभ नीति के अपनवलस। महल में रहल, घूम-घूम के खाए के जनता के आ खजाना से मजा मारे के, तिकड़म भिड़ावल,…आ दरबार कइल।…कांगरेसो नमूना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के विरोधी दल साबित भइल। नौ महीना में साफ राज उलटि देलस। बागडोर बदल गइल।....

☐ डायरी लिखे का बेरा ले ई निहचिंत हो गइल बा कि बिहान भोरे सात बजे मंतिरी लोग 'किरिया खाई-- कि हम कबहूँ सांच ना बोलब, जइसे होई ओइसे ओइस अपना आदमी के नोकरी देब। घर का हर सवांग का नांव पर बैंक में रकम मोट होई, खेत लिआई, कारखाना खुली, मकान बनी—रोज अखबार में भासन दिआई कि खजाना खाली बा—जनता धीरज से आपन खून देके ओके भरो। बिहान हमहूँ कसम खाइब। ई सब मने-मने होई। हाथी के दांत खाए के आउर होला आ देखावे के आउर।

☐ आज रमा जी का गाड़ी (बैल गाड़ी मत बूझीं) पर बइठ के राजभवन गइलीं ऊहाँ आउर लोग का संगे मंतिरी पद के सपथ लिहलीं ह। बाहर निकलते-निकलते लोग माला से लाद देहल ह। हम मुसुका-मुसुका के पद के चासनी लेहल सुरु क दिहनीं। दिन भर लोग बधाई देवे आइल ह। झुनुक लाल जी धधाइल आइल रहले ह। ई पहिले दिनभर सोभापति के दरबार सेवत रले ह। रात क एगार बजे फुरसत भइल ह। रमा जी आ गइल बाड़ी। अब लोग से मिलल बन क दिहलीं। मिजाज चूर-चूर हो गइल बा। विभाग के बँटवारा हो गइल। हमरा कवनो खास ना मिलल। कह के हार गइलीं ह कि भाई हमरा 'ओजनदार' विभाग मिले के चाहीं जहाँ एगो बदली में लोग पाँच हजार फूँक देला, एगो ठेका में लाख ले हाथ लागेला, एगो बहाली में....। बाकिर जे मिलल ईहो कम नइखे। 'ना' से 'हूँ' भला। आज बुझाता कि काहे किरनिया 'नीमन टेबुल' खोजेले स।

अबगे सचिव भी आइल रहले ह। जेकरा लगे जाए में काल्ह ले डर लागत रहल— ऊ एह बेरा 'जी हाँ हुजूर' कहत अघात ना रहले हँ। रमा जी के कहनाम बा कि चूँकि कांगरेस अबहीं सरकार में ना आई एसे हमरा ऊहे करे के पड़ी जे ऊ कहिहें। ऊ चाहतारी कि हम सचिव, उपसचिव वगैरह के बदल के उनुका आदमिअन के ले आईं। उनुकर मन राखहीं के पड़ी।

☐ आज मंतिरी बनला एक हफ्ता हो गइल। अपना चुनाव छेत्र में गइल रहलीं हँ। लोग काला झंडा देखावल ह। एगो जुलुस निकाल के लोग डकबंगला पर आइल। आगे आगे एगो हाथी पर 'कुत्ता' चढ़ल रहे। एक आदमी ओकरा के जूता देखा के कहे—'बोल साला, बोल, तोर दाम कतना बा?' ओकरा पाछा एगो बैल-गाड़ी पर पटिहाट धके एगो मेहरारू राँड़ के स्वाँग भरले रहलि—चूड़ी फोरले! ओकरा आगा हमार पुतला रहल। डकबंगला में लोग हमार पुतला जरावल ह। दलबदल मुर्दाबाद !....हूँह। सभ विरोधी दल के करतूत रहे। सरवा बदनाम करे पर लागल बाड़न स। हमार लहल ओकनी का इचिको सोहात नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काल्ह ईहे लोग गोड़ में तेल लगाई। एक-एक जाना से ना सधवलीं त कही लोग। अब हम मंतिरी बानी—सरकार बानी! आ ऊ लोग ठाठा बूझता। नाँव नोट क लेले बानीं।' जिन-जिन जाना फउँकत रहलन ह, सभ जना के टेकुआ खानी सोझ क देब। हमार मारल मेंमिआई लोग ना! जिनगी भर के कोर-कसर एही में घुसरी। अफसरवो कतना घाघ होले स। काल्ह ले गइला पर गुभुआत रले स, झबरा कुक्कुर खानी खोनसा के पड़त रहले ह स आ अब कुआर का पिल्ली खानी दाँत चिआर के पोंछ हिलावतारे स! अब हमरा बुझाइल ह कि काहे लोग एह कुरसिया खातिर ललचत रहेला, एपर गीध खानी ताकत रहेला कि कब मोंका मिलो कि लूझ लीहल जाय।

□ ···नाया बँगला आजे मिलल ह। खूब सजावल बा। सभ कमरन में एक-मे एक लरम गलइचा बा कि बइठते हाथ भर धस जाता। रमा जी के नेवत दिहलीं हँ कि जैगो मन करे अपना इच्छा से सजवा लेस। उनहीं का नू भोगे के बा। एह गलइ-चन पर उनुकर गुदुगर देह में लपेटाइल सेंट ना गमकी त का हमरा गाँव में फदगोबर खानी सउँसे देह हगुआवत बचनी के माई का लिलार के टिकुला चमकी! हमरो भाग में ऊहे सटाए के रहली! बाकी बिआ सतवन्ती! कुछुओ क दीं सीत-बसन्त कुछ ना बोले। बड़ा सहाउर ह।····अइबो करी त कवना कोना में पड़ल रही। तगड़-बगड़ ना करी ऊ, एकदम गाय हिअ। रमा का हो सकेला पसन्न ना पड़ी। हमार सभ फाइल उहे देखतारी। लोग उनके से भेंट क लेता।····गजब के बिआ ईहो मेहरारू। तनिको ठंढाय ना, एकदम गरम जिलेबी ह।···हाथो मार लेतिया, कुछ देखार आ कुछ गुपेचुपे। ले भई, तेहूँ का कहबे! हमरा लगे तें बनल रह, बस ईहे चाहीं; हमरा अतने चाहीं।

बाकी एगो दिक्कत हो गइल बा। लोग हमरा के बुरबक बुझके ठग लेवे के चाहता। तीने-चार दिन भइल होई। ऊ बड़ा बबुअवा कइसन मुँह बना के कह गइल—'····का फाइल में सभकर नोट आ गइल बा, अब दसकत क दीं।' मन हमार अगरा गइल। च ल, नोट मिलल शुरू त भइल! 'रख द, हम देख लेब' कहके हम लगलीं कागज पर कुछ लिखे ताकि ओकरा ई मत बुझाव कि हम हहुआ गइल बानी आ नोट देखलहीं नइखीं।···कुछुए देर में ई बात साफ हो गइल कि ऊ हमरा से झूठ बोल देलस ह—पन्ना-पन्ना देख गइलीं कतहीं एको छदाम नइखे लागल। आ ओपर से कह गइल कि 'सभ नोट फाइले में बा।' ऊ त बाद में रमा जी बतवलीं कि 'फाइल का नोट' के माने का होखेला। पौलिटिक्स में केहू लजाय ना बाकी हम तनी लजा गइलीं। बुरबक नू हईं।

□ ····अब त सवाँसे नइखे पड़त। कतना लोग जुटल रहता। हरदम मेला लागल रहता। दूर-दूर के सार लागे वाला लोग जुम गइल बा। हम जानतो ना रहलीं कि हमार आपन नाता-रिश्ता में अतना लोग भरल पड़ल बा। एमेले में अतना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होश ना आइल रहल ह। अब त जे आवत बा गोड़ छू के प्रनाम दागता। मन हुलस के रह जाता। ई मतिरी बनते का हम बदल गइलीं कि हमार खानदान बदल गइल ? हमरे बाबू के नू पताल पर खिलल नवलखा जामुन तूड़े का फेर में डाढ़ छोड़ देहला से गोड़ छटक गइल रहे। कतना जतन आ जोड़-तोड़ से बाबूजी हमरा खातिर एगो चिरई के जोगाड़ लगवलीं। ई त संजोग रहे कि सन बेयालिस में भईंस चराके लवटत का बेरा गाँव में ढुकत लाल पगड़ी लउक गइल आ हम बदहवास होके भईंस के रास छोड़ के अवचके भगलीं कि एगो टामी के नजर हमरा पर पड़ गइल। ठोकर लगला से मुँहकुरिए जे गिरलीं कि भर मुँह माटी आ गइल। कवनो लकड़ी का टुका से मँसूड़ा खोदा गइल कि दाँत का हल गइला से ओठ चिथुरा गइल पता ना बाकिर जब टामी सरवा हमरा डाँड़ पर बूट का एड़ी से ठोकरिया के बनूक का कुन्दा से उलिटलस त हमरा भर मुँह में माटी का जवरे लोहुओ भरल रहे।...हमार टाँग धके हवागाड़ी में फेंकलस त कवनो गल्ला का बोरा खानी हम धव्व से गिरलीं। हड्डी चरमरा गइल। डाँड़ चटक गइल।...ईहे सुजोग रहे हमरा जेहल जाए के। उहाँ कुछ नेताओता लोग भेंटाइल। ओ लोके खूब मन से सेवा कइलीं। केहू के देह दवा दीं, केहू के धोती फींच दीं, केहूँ का गोड़ के अँगुरी पुटुका दीं। दू-चार दिन में तेल मले के रिआज हो गइल। मस्टंड देह रहे। एसे एगो नेना जी रोज नहाए का पहिले हमरा से मालिस करावस।....बड़ा मनवो करस। ऊहे बाद में चलके राज के नामी नेता भइले त....टिकट के जोग बइठ गइल आ फेर...टंट—घट लागत आज ई कुर्सियो भेंटा गइल।

....रात रमा जी बड़ा उदासल रहली। ढेर जगे से घूम के अइली। का दू अखवारो में निकलल रल। कुछ लोग मुख्य मंतिरी के नरेटी चाँपता आ ऊ छपिटा तारन। ऊ लोग हो सकेला ऐन मौका पर धोखा दे जाय। राजनीति हमरा जाने एगो बेसवा हवे। कब केकरा पर कनखी मारी, कब केकरा के लेके मगन होई ना कहल जा सके। बाकिर रहे के त एही में बा। आज केहू कुर्सी छीन ली त फेरू काल्ह हाथे लागी, ना काल्ह त परसों-तरसों....नरसों....। कुर्सी का असरा में टकटकी लगा के सोचल कुछ, बोलल कुछ, कइल कुछ ईहे ह राजनीति ! कहाँई जन सेवा, होई मन सेवा ! ऊपर से देखे में टिनोपाल लगावल झकाझक खादी खानी चमकत लागी बाकिर भीतर से....आपन बात कहाँ ले खोलीं ? लाज लागता।...बाकिर लाज काहे लागता ? जे राजनीति में रही ऊ लजाइल त भइल चउपट। का हमार दिन लद गइल, हमार भाग अब दगा दी ? नाँ, त हमरा लाज काहे लागता ?

रात रमा जी के झँवाइल मुँह देख के करेज फाट गइल।....अनेसा में हमार सँसरी टँगा गइल। जे कुछ बतवली ओसे त हमार अउँघिए गायब हो गइल। रात भर अपनी कुर्सी पर बइठल बिहान कइलीं ह। का जाने केने से आके केहू हड़प लेवे एह कुर्सी के...पपनी सटते नइखे। छाती धुक्-धुक् करता। भगवान जी आज के रात पार लगावस, एह कुर्सिए पर बइठल मिनसहार होखे, दिन होखे, रात होखे....। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लहोक

●

बड़ी मचण्ड देह रहे रामफल के। गभरु जवान लोहा खानी बज्जर बाँह। चाकर मुँह पर अईंठल मोछ बड़ा कड़इला लागे। आँख तनी बड़-बड़ रहे बाकी बरौनी का तनी उपर कटइल के कुछ गहिरा लकीर दू, कइसन दू लगवे करे। जब से रामफल आइल चमटोलीके रंगते बदल गइल। आज ले कपसल - कुँकुरल रहे चले वाला बुढ़वनो के डाँड़ तनी सोझ हो गइल रहे निहुरल मूड़ी कुछ तनाइल अइसन लागत रहे। जवान लड़िकन के त बागे ना धराय। ओकनी के पहिले त रोजो साँझ भइला का बाद रामफल का पलानी का लगे बटूरा के फूस - फाँय कइले स आ बाद में छानल कउड़ी मारे लगलें स। जे जवान तनी सा पढ़ल लिखल रहे ऊ साफ जामा - जोरा पहिरले बेहिचक मेला-बाजार टहरे लागल आ भोर काम पर जाए का पहिले आ साँझ के गदवेरा का लगभीर देह में माटियो लागे लागल। रामफल का अइलन चमटोली के हियावे दरियाव हो गइल, हवा का झोंका में जब मड़ई के खर्हों डोलें त बुझाय कि पूरा टोला के साँस साँप अस फोंफ मारत बा।

रामफल एह गाँव के रहे ना। ओकर बाप दादा एह माटी में ना जनमल रहस। ओकर जनम भूईं इटवाँ से दस कोस से ऊपरे पड़ी। बाकी ओकर नेह के नाता जुट गइल रहे एह गाँव से। संयोग रहे कि चमटोली के सबसे सुन्नर बेटी का मांग में सेनूर भरले रहे रामफल। घरे केहू रहे ना एसे घरजमाई बनके ऊ ससुरारे में रहे कमाये आ गइल रहे। घर के अकसरुआ भइला का ओजे ऊ घुनबो-फिरवो खूब करे। पूरा जवार में हरिजन समाज ओके जान गइल रहे। ओकरा बात के लोग आदर करत रहे एही से रामफल जब अपना ससुरार तेलछो में आके बस गइल त सउँसे चमटोली ओके अगहर के अपना लेलस।

तेलछो बड़हन गाँव ह। बहुत आबादी बा। ढेर दमगर गिरहत्थ कुरमी लोग बा नीमन जियका - जँजाद बा सभका। बीस-पचीस घर अहीर लोग बा। एक घर बबोजी बाड़न। गाँव का एक ओर अलगे हट के चमटोली बसल बा। एही चमटोली के चमार आ पाँच - सात घर दुसाधन का बलपर गाँव भर के खेत जोताला, बोआला, सरिहराला आ कटाला। ई लोग अँडे बच्चे मरदे - मेहरारू किरिन उगते अपना - अपना मालिक का खेत में जुम जालन आ फेर तर - तर पसेना चुआवत अढ़ाई-तीन सेर मजूरी लेके साँझ खा घरे लवट आवेलन। कुछ लड़िका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खानी पानी करे लेसन कुछ चरवाही। अइसन कवनो घर ना बा एह चमटोली में जवन कवनो ना कवनो चउधरी का नाँव से जुटल ना होखे। ऊ घर चउधरी के गुलाम बरोबर बा जब जइसन हूकुम तब तइसन सेवा। नाँ ना करे के बा आ ना कुछ बात घरे के बा। गारी - बात थूका-फजीहत के आसीरबाद बूझ के लीलत रहे के बा जइसे कठेस सानल सतुआ के पिठूरी होखे - मुँह में धइलीं ना कि गट से नरेटी से नीचा उतरल।

चमटोली का लइकिन का कम सासत नइखे। दूर-दूर ले चँवर बा। माँह पातर कतहीं कुछो ना। चाल करीं त केहू ना सुनी। ओह खेतन में फसिल लहराले त चउधरी लोग के मन सुगबुगाला। ऊ लोग कब कवना छउँड़ी के ध ली नइखे कहल जा सकत। सगरी जइसे जजाते ह। दोसरा गाँव से बिअह के आवे वाली कनियाँ आ एही गाँव का माटी में खेल के जवान भइल धनिया - कवनो के सत बाँचल मोसकिल होला। बाप बेटा में कवनो बरावा ना रहे। ई आदत जइसन हो गइल रहे। जवना चीझ के सुभाव बन जाला ओमें बाधा पड़ला से बड़ा लहर आवेला। अइसन के एगो लहर आ गइल तेलछी गाँव में रामफल का अइला का पाँच छव महीना बाद।

साँझ के बेरा रहे। किरिन लुक - झुक करत रहे। गाँव का बहरी सड़क पर चार - पाँच गो नवहन के गोल टहलत रहे। एही बीचे ओ लोके नजर लगहीं खेत का डँड़ेर पर से चलल जात तिलेसरी पर पड़ल। मोसकिल से पन्नरे के होई ऊ। अबहीं भोरे का धूप खानी रूप खिलत रहे। अवचके दू जाना चउधरी टोला के सपूत लोग छड़प के दउड़ल आ तिलेसरी के दबोच लेहल लोग। ऊ भागे के कोसिस कइलस बाकी हड़बड़ा के गिर गइल। ओकर हाथ पाँव चलावल बेमानी रहे। ओह छोकरन का आँखि में लहोक उठ गइल रहे; करिया गाल धीकत जात रहे। दू-दूगो जवान एगो चिड़ई पर टूट पड़ले। पाँख नोंचाये लागल। धींचा-मकुनी में एक जना अनराज होके एक थापड़ मारियो देहले। तिलेसरी के चिकरल-चिलाइल के सुनत रहे ओजा।

बाकी संजोग कहीं....। रामफल के निगाह दूरे से पड़ल। ओकरा बूझत देर ना लागल। उहो खेत पर से लवटल आवत रहे। तिलेसरी ओकर चचेरी साली लागे उ अपना हाथ के लाठी सम्हरत धावल बुझात रहे कि हनुमान जी हहास बनहले सीता सतवन्ती के बचावे खातिर अशोकवन में ढुकत होखस। रामफल निगिचा गइले त तिलेसरी के कबहूँ रोवला के कबहूँ निहोरा कइला के आ कबहूँ गरिअवला के आवाज सुनाये लागल। आवाज जब ठीक से कान में पड़ल त रामफल त जइसे भूत हो गइल।

चउधरी के एक जना उलांक छँवर जहसहीं तिलेसरी के पटक के ओकर ब्लाउज धके दराक से फड़ले कि उनका आँख में जोन्ही फुला गइल। रामफल का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाठी के हाथ पीठ पर बंजरल आ आँय कके उ ओहीजा पसर गइले । डाँड़ के हड्डी चटक गइल । पीठ पर के जब खलरा ओदर गइल त बलबला के लोह बह चलल उनका दाँत लाग गइल । दोसर जना चहले कि अझुरा जाईं त रामफल का लाठी के हुर्रा उनका गालपर बइठ गइल त पञ्च से भर मुँह खून भर गइल । दूगो दाँत साफ हो गइल । रामफल खीसि भूत हो गइल रहे । ओकर लाठी मुड़ी का ऊपर ले उठल आ लहरा के गिरही चाहत रहे कि तिलेसरी बाँह धके कहलस—"ना हो पाहुन जान मत मार !"

रामफल के लाल -लाल आँख तिलेसरी कावर घुमल "चुप रह ते····।"

—"···हँगामा हो जाई । सउँसे गाँव बनूक लेके चमटोली के उजाड़ दी पाहुन । आज अतने भर । भगवान जी सहाय हो गइली हँ ना त ई पापी आज हमार इज्जत बिगाड़ दितें स।" तिलेसरी का आँख से झर-झर लोर गिरत रहे ।

रामफल के हाथ तिलेसरी के बात सुनके कि चउधरी लोग का सँगे झंझट उपटला के वमत सोच केईना मालूम । ओह दून के ओहीजा पटाइल छोड़ के ऊ तिलेसरी का जवरे गाँव कावर चल दिले । सड़क पर टहलत दोस्त लोग जब टाँग-टुँग के ओह चउधरी--सपूतन के गाँव में ले आइल त सऊँसे चउधरी टोला चोटाइल गहूँअन सरप लेखा फन काढ़ के ठाढ़ हो गइल ।

चमटोली के सुगबुगाइल देख के त आग आउरो लहके लागल । बूढ़- जवान सभे ना जाने कबसे चल आवत एह भोग सुविधा के अइसहीं छोड़ देवे के तइयार ना भइल। का बाप आ का बेटा - सभे त पियासले रहे, रात-बिरात बिना कुआं चिन्हले ···· पानी पिए के आदी । एसे सभें बिढ़नी अइसन बनबना गइल । जवानन के बइठक अलगे भइल, बूढ़ चउधरी लोग अलगे बइठल । मोरवा वन्हायं लागल, गोल बिटुराये लागल ।

चउधरी लोग ई सहे के तेयार ना रहे कि चमार-दुसाध अब एह लोका लरिकन के मारस-पीटस । जवने पत्तल में खाए के ओही में छेद करे के ? रामफलवा के जान बलाय भइत वा ।

... ..सउँसे चमटोली के फूँक के ताप घाले के पड़ी । कतहीं सँसरे के जगे बा सार लो····का ? जवना जमीन पर बसगीत के पलानी वा तवनो त ओकनी के नइखे ? फेरु ई रामफलवा सार काहे आग वोअता ! कवना वल पर फउँकता ?

एने चमटोली का ज़वानन के गोलो गनगना गइल रहे । ऊ रामफल के देह धके किरिया खइले स—जहाँ तहरा रेफ लागल कि खून के धार बह जाई । हमनियो का भाई-बहिन-मेहर के इज्जत होला । अब मूड़ी लटका के अपना सोझे बेटी-मेहर का जवानी से खेलत चउधरी लोग के सिहुर-सिहुर कके छोड़ दिहल मउगई होई ।···· खून के वदला खून से लिआई···· अगर एको कवनो चमटोली का लइकी पर हाथ भा आँख उठल त दूगो कुरमी लोके लइकिन के जबरदस्ती उठा के बेइज्जत···।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'ना भाई, ई ना ना होखे के चाहीं। जइसन हमनी के मेहर'बेटी-बहिन ओइसने चउधरी के धिया-पुतरी ! मेहरारू के देह भोगे के बतुस ना ह।····हमनी का अइसन एका देखावे के बा, अइसन वरत तेज आँख में भर लेवे के बा, अतना तागद बाँह में राख लेवे के बा किनहूँ का मुँहकरखीं लगावे खातिर चमटोली किओर ताके के हियावे ना पड़े !···गरीव के शक्ति एकता में बा, एक होके अपना समस्या से जूझे में बा ! —'

रामफल के मेहारारू सुन्नरी पहिले गाँव के सबसे वड़ आ धनिक आदमी रामप्रीत महतो के होके रह गइल रहे। ऊ अतना सुन्नर रहे कि । बाकी, जब से रामफल से बिआह भइल ओकरा रामप्रीत पर मन भिन-भिन करत रहेला। कतना उदार बा एह मरदुआ के मन, कतना पोढ़ बा एकर छाती ! कवनो तूफान से टकरा जाए के हूब वा रामफल में ! कतना वेरहमी से सुन्नरी के बगइचा में से घेरवा के रामप्रीत महतो ओकरा सँगे मुँहकरखी लगलवे रहले····ई इयाद पड़ते ऊ पच्च से एक चोता थूक फेंक देले धरती पर। अतना घिनावन बा आदमी के मन ? घर में आपन मेहर-चेंथरूआ पर लहालोट बिआ आ अपने दोसरा जगे कुक्कुर खानी हाँड़ी में मुँह डालत फिरेले।

सुन्नरी सभ बात खोल के कह देले रहे रामफल से। छाती में मुँह लुकवले ऊ रो-रो के आपन दर्दनाक कहानी सुनवले रहे। पहिले ओकरा डर रहे कि कतहीं भिनक मत जास बाकी बात-बेवहार से ओकरा लागल कि एह बात के ना कह देहल मन पर पत्थर धके जीयल होई ! औरत भरसक जवन बात मुअे का दिन ले दोसरा से छिपावेले, ऊहे सुन्नरी अपना रामफल से रत्ती-राई सब बता देलस। रामफल के अँगुरी ओकरा पीठ पर नेह से घूमते रह गइल, ओकर लोर पोंछ के उ कहले रहस···· 'ना रे, ई त अत्याचार हमनी का सहते आइल बानीं—खाली अपना कमजोरी से, फूट से, गरीबी से। जबाना बदलत बा, अब कुछ अइसनके करे के पड़ी कि कवनो सुन्नरिया का जबरदस्ती कवनो रामप्रीत का गोदी में एह से ना जाए के पड़े कि उ गरीब बिआ, ओकरा पेट में भूख के आग बा····। तहरा सँगे जे रामप्रीतवा कइलस, ओमें तहार त कवनो लगाव बा ना, उ त बेबसी का ओजे से भइल—बाप—भाई के जान बचावे खातिर भइल— देह के क्लेश से निबुकावे खातिर भइल। तूं हमरा खातिर गंगो से बढ़के पवित्तर बाड़ू—सतीं—सतवन्ती बाड़ू।'

सुन्नरी का दिल पर के भार हट गइल रहे आ अपना रामफल के उदार हृदय का परस में ओकरा मन के फूल आउरो गमक उठल रहे।

ना चाहत रहे सुन्नरी कि फेरू एह घाह में धनके आ जाव बाकी रामफले का ओजे आवे के पड़ल। भाग के केहूँ कहवाँ जाई ? भागमे भाग में त ई दिक्कत सोझा आवता, मुँहे चोरवला से त सभका जिल्लत उठावे के पड़त बा। सुन्नरी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उहे करे वा जे रामफल का भावे। ओकरो मनोबल बढ़ गइल बा, उह्रो सब दनवाँ-दईंत से लड़े खातिर, जुझे खातिर तेयार हो गइल बिआ। रह-रह के ओकरा अनेसा कि का ओकरा सउँसे चमटोली में जुझे के हियाव बा, का गरीबी से टूट गइल जिनगी ठाढ़ हो सकतिया, अपना पहुँचा का भरोसे का धनी-मानी जर-जमीन वाला एह राक्षसन का चपेट से बँचल जा सकेला ? रामफल कहेलन कि ई हो सकता खाली साँच मन से आपुसी एका के जरूरत बा।

....आ संघर्ष शुरू हो गइल बा। तिलेसरी के कांड लेके पुरा गाँव दू गो गोल में बँटा गइल बा। महतो जी ·लो के परलगे त उ लोग रामफल के वोटी-वोटी चवा जाई, बुन-बुन रकत पी जाई! कतहीं माँह-पतरा में....

एने रामफलो हुँसियार रहता। अकेले चलत नइखे। ओकरा अपना हाथ का लाठी पर भरोसा बा आ भरोसा बा कहीं से उपरावल ओह नली पर जवना से एक हाली 'ठाँय' कइला पर फेरू घट में प्राण ना रह जाय। अइसे त ठाँय-ठाँय वाला देशी बनूक घरे-घरे वा। चमटोलियो में वा-ई ढेर बल बा। रामफल बँवड़ेरा खानी घूमत रहेला। कब केने से निकल के उपर हो जाई, ना कहा सके।

एक दिन सुन्नरी के रामप्रीत महतो फेरु घेर लेहले। पहिले पोल्हवले-फुसलवले, पहिले के बात के इयाद दियवले। सुन्नरी जब हत्था पर ना चढ़ल त डरवले-धमकवले। रामफल के जीयते बलि चढ़ा देवे के कहले। सुन्नरी बमक के कहलस—"....जे हो गइल से हो गइल। अब अगर तूँ हमरा के छू दिहल त जुलुम हो जाई।.... जा ना, अपना मेहरी के देख जे दोसरा से आस लगावतिया।....तहरो, बहिन—बेटी बा। अतना देयानत ना बिगाड़े के।...'

जब रामप्रीत ना मनले आ फेरू पहिला दिन खानी जबरदस्ती पर उतर अइले त सुन्नरी बाघिन खानी बिफर के कहलस—"...हो चउधरी, अइसे ना मनब त ठीक ना होई। लगे अइल कि लाद फाड़ देव।"....आ ओकर एगो सधल मुक्का उनका नाके पर बइठल। भिनास फूट गइल आ उ तलमला के गिर गइले।

रामप्रीत खीसी दाँत पीस के रह गइलन। उ झपिटते बाकी का जाने केने से राम फलवा दू गो लंवडन का जवरे आ गइल—'चउधरी, सउँसे छुरा लाद में छोंप देब....। चुपचाप चल जा। हमनियो के जीये द। आज चेता के छोड़ देतानीं। फेरू हाथ डाले के कोसिस कइ ल त बुझ लीह.... ।'

आ रामप्रीत मुँह लटकवले रस्ता ध लेलन। सुन्नरी के छाती धोंकनी खानी चलत रहे आ नाक फुलत-पचकत रहे। रामफल आँख लाल-लाल कइले रामप्रीत के जात देखत रहे। ओकरा बुझा गइल कि अब निवही ना। आमने-सामने आवहीं के पड़ी। ई रामप्रीतवा एजा के हुँड़ार बा बाकी जब ठन गइल त ठन गइल। देखल जाई।

रामफल के सिकाइत थाना में पहुँचे लागल। ई डकइत ह, गरोह बन्हले बा,'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रात खान दूर-दूर ले धावा मारेला। रामप्रीत अपने के हाली जाके दारोगा जी के कान भरले। उनुकर जेब गरमवले आ फंदा तैयार हो गइल। एक रात रामप्रीत का दालान में सेन्ह पड़ल आ हो-हल्ला भइल। होत भिनुसहरा पुलिस लेले दारोगा जी हाजिर हो गइले। रामप्रीत साफे बयान दिहले कि हल्ला भइला पर उ रामफल के भागत देखले। रामफल का एकर-अनेसा रहे काहे कि ई बाबु लोग के पुरान हथियार रहे। उ सम्हर के देखवा लेलस कि ओकरा घर का आस-पास महतो के कवनो चीज-बतुस बा कि ना आ इतमिनान हो गइला पर चुपके से टकस गइल। पुलिस आइल बाकी गिरफ्तारी ना हो सकल। तत्काल रामफलवा बाँच गइल आ घवाहिल साँप खानी खतरनाक हो गइल।

दूनू गोल के दुश्मनी बढ़ गइल। एक तरफ धन-जन जोम देवे लागल आ दोसरा ओरी रामफल के अकिल आ गरीब-दुखिया से मिल-जुल के रहे के बल बढ़े लागल। पुलिस किहाँ जवार में कै गो डकइती में रामफल के हाथ भइला के सिकाइत एकट्ठा हो गइल। पुलिस का निगाह में रामफल एगो डकइत बन गइलन आ आस-पास का गाँवन के गरीब हरिजन के उ अपने-आप नेता मान लिहल गइलन।

रार बेसाहे वाला खातिर ढेर इन्तजार ना करे के पड़े। आन्हर कुक्कुर त बतासे भूकेला। पूरा महतो मण्डली अपना सामरथ का घमण्डे आन्हर रहे। लागल आदत छूटे ना। एक-ब-एक जे पूरा चमटोली में रामफल का चौकस बाँह के चहार दिवारी खींचा गइल त महतो कुल के जवान दुलरूआ लोग तड़फड़ा उठल। एकाधे गो चमइन अइसन रहली जे कभी-कभरा कनखी का कोर से तनी लुक-छिप के रस ढरका देस ना त सभे अपना बेबसी के उघार करे से कतराए लागल। रामफल का मरदानगी के पुरजोर असर भइल आ काल्ह ले हरजाई वूझ के मनमाना भोग लागे वाली चमटोली का अपना अनमोल अस्मत के नीक पहिचान हो गइल।

महतो टोली आ चमटोली के आपुसी दुश्मनी तब आउर लहक उठल जब अचानके रामप्रीत महतो के एगो आउर चिड़ई रामफल का मदद से फुर्र से उड़ गइल। सउँसे गाँव में एगो पंडित जी। जजमनिका ढेर बाकी घर में सुबहित दाना मोहाल। गरीबी कवनो जाति चीन्ह के त आपन गोड़ ना पसारे। सभ जाति में गरीब बाड़े। साँच पूछीं त दुइए गो जाति बा समाज में—एगो धनिक के, एगो गरीब के। धनिक खातिर सभ ओर हरिअरे बा आ गरीब का नसीब में अँओर लिखाइले नइखे। धनिक आ सामरथ वाला चाहे चमटोली में रहे भा बभनटोली में ओकर चारु घीवे में डूबल बा, ओकरा सभ मउज-मस्ती अलगंज लागल बा आ, जे गरीब बा ऊ चाहे हरिजन होखे भा ब्राह्मण ओकरा जिनगी भर सासत, घुटन आ भूख के कलेस एके खानी सहे के बा। गरीब पंडित जी के सामाजिक मान-सम्मान चाहे जवन होखे बाकी अर्थ से हीन उनकर जिनगी एगो ठुकठुकी बन के रह गइल रहे। ओपर से उनका पर राम-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रीत महतो के सनीचर आपन पूरा निगाह डाल देलस। उनुकर बिअहल बेटी जब ससुरार जाए के चाहे, जब पंडित जी ओकर दिन धरे के चाहस त रामप्रीत अड़ंगा डाल देस। ऊ उनुका कन्या के आपन कनिया बूझ के भोगे लगले। एक दिन पंडित जी कुछ तरख भइले त रामप्रीत घर में ढुक के उनका के हुरपेट देहले !

पंडित जी जब रोवत-गिलगिलात रामफल से आपन दुखड़ा सुनवलन त रामफल से ना सहाइल। ऊ उनुकर दुख हरे के बचन देके निहचिन्त कइले आ कहले कि "घबड़ाईं मत। हरन्ते राउर बेटी ओह चण्डाल का जाल से बचा लिहल जाई !..."

आ, साँचो एक दिन ऊ बेचारी गाय अस सूधा ब्राह्मण-कन्या अपना ससुरार सही-सलामत पहुँच गइल। पंडित जी का साँस मे साँस आइल आ पहिलहीं से चोटाइल रामप्रीत अब गँहुअन खानी छत्तर कढ़ले डेंकरत-फुँफकारत रामफल के काटे खातिर व्यग्र हो गइले।

रामफल का बढ़त-चसकत मन के अगर बल आ डंटा से ना रोकल गइल त फेर महतो-टोली के नाक कटा जाई, सब रोबदाव माटी में मिल जाई !

एकतरे से दूनू आर से दिन रोपा गइल आ आपन-आपन बउसाव तउले के तैयारी होखे लागल। हीत नात के खबर चहुँपावल गइल। जवार के कुछ नामी-गरामी लोग जुट के रामप्रीत महतो किहाँ डेरा डालल। मुर्ग-मुसल्लम चले लागल; बोतल चढ़े लागल। घर से दुआर ले गहमागहमी बा। रामप्रीत ओ सहीं सभका आवभगत में बाझल बाड़े जइसे केहू उनका दुआरी बरिआत लेके आइल होखे रामफल उठा ना धइल। दूर दूर के लठधर दुसाध चमार छाती तनले आ लाठी पतले चमटोली पहुँच गइलन।

आखिर दूनू दल में हचमहच हो गइल। कस के लाठी चलल। गोलियो दगाइल। कतने जाना के कपार फूटल। चमटोली बीसे पड़ल। महतो गोल का पाछा हटे के पड़ल। दुपहरिया का पहिलहीं जवार भर का हरिजन का सजग एकजूट होके विरोध कइला से रामप्रीत महतो का अपना मन के पूरा करे में विफलता मिलल। आमने-सामने का एह द्वन्द्व युद्ध में बहुत लोका चूना हरदी चढ़ल बाकीं कवनो जान ना गइल।

हार पर हार का चोट से रामप्रीत महतो के मुँह लटक गइल। उनका पर गाँव के कुछ बूढ़ पुरनिया लोग चाँप चढ़ावे लागल कि सभ रार झंझट के खतम कके रामफल से सुलह क लेहल जाव। खेती गृहस्थी के काम बड़ा हरज होता। ऊहे बिला जाई त फेर केकर भरोस कइल जाई। अब पहिले के जबनो ना रहल। ऊपर से सरकारो ओही सभ के मन चसकावतिया। रामप्रीत त भीतर से अदहन खानी खऊलत रहले बाकिर उपर से मान गइले। सुलहा करावे खातिर रामफल से बातचीत जरूरी रहे आ ओकरा महतो टोली में आके बतिआए में उजुर रहे। रामप्रीतो चमटोली में हेले खातिर तैयार ना रहस। अन्त में तय भइल का ई घरभरन महतो के दिआव काहे कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे गांव भर में अकेला महतो रहस जेकरा से रामफल का भा चमटोली का अउर केहू का कवनो अनेसा ना रहे।

अन्त में सँझलौका मे रामफल चार पाँच गो सँघतियन का जवरे महतो जी का अँगना में आ गइले। आमने-सामने बतकही होखे लागल। सदर दरवाजा बन्न कइल रहे! कीली ठोकल रहला से बाहर से केहू का आवे के बात ना रहे। आमतौर पर तुरन्ते कवनो मार पीट के अनेसा ना रहला से आ पुलिस का जाल में फँसे का डर से पहिलका झोक में आपन-आपन दाव देखा के रामफल के गोल आपन जगे ध लेले रहे। महतो किहाँ भी बहरा से आइल अब कुछे लोग बिलमल रहे।

आपुस में आँख में आँख डाल के जब बतकही जमेले त मन के ढेर मइल साफ हो जाला। तय हो गइल कि केहू महतो टोली के मरद अब चमटोली का लइकिन पर निगाह ना डाली आ बेगार ना ली। चमटोली के लड़िका-सयान मन से काम करिहें मेहटिअइहें ना। एके गाँव में रह के बैर रखल गाँव के सत्यानास कइल बा। ई जोर त आन गाँव का जवरे झंझट में नू लागे के चाहीं। चमार भा चउधरी सभे त एही गांव का माटी में नू खेल-कूद के सयान भइल बा आ फेर एही माटी में गिल जाए के बा!

रामफल मान गइले। रामप्रीत आ रामफल दूनू जाना हाथ मिलवले। फेर एही खुशी में कुछ पी-पा लेवे के प्रस्ताव भइल त तनिए देर में बोतल पहुँच गइल आ भुँजल मांस का कुटिया पर चुक्कड़-के-चुक्कड़ ढराये लागल। सभे खूब छक के पीयल। रामफल भीतर से खुश रहले—एसे तनी ढेर चढ़ गइल।

रामफल का पता ना रहे कि रामप्रीत के मन साफ नइखे आ ना घरभरने का एकर भरम रहे। ई लोग निहचित्त रहे कि एगो दीवार में के ईंटा खसका-खसका के एगो नवहा छोकरा गोड़ जँतले घर में ढुकल आ सम्हकर नजर बचा के केंवाड़ी के कीली खोल देलस।····फेर त खमाखम बीस-पच्चीस आदमी भाला-बर्छी के नोंक पतलें ओह जगे पहुँच गइलन जहाँ रामफल सुलह भइला के खुशी मनावत रहलन। जब ले ऊ आ उनुकर सँघतिया लोग धोखा के बात बूझे तले बेकाबू हो गइल लोग। पलक झपकत सब हो गइल।

पाँचो जाना के बाँह चउर-चउर के पाछा बान्ह दिआइल आ घरभरन का निहोरो कइला पर केहू कान ना कइल। ऊ रामप्रीत के गोड़ ध लेहले त एक लात अइसन पेरू में लागल कि 'बाप रे····' कहके ओहिजा दुहरिया गइले। रामफल का आँख में खुन उतर आइल। ऊ लात चला दिहले जवंन निहुरल रामप्रीत का मुँह पर बेफाँट बइठल आ झाईं आ गइल। ओठ फाट गइल त खून के एगो लकीर खींचा गइल। रामफल के चेहरा अदंक से ना घृणा से भर गइल रहे।

रामप्रीत का मुँह पर खून देख के महतो टोली के नवहा आग हो गइलें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ ए सब लोके गोड़ो छान दिहले। पाँचो आदमी के बहरा ले आके एगो गाछ तर धइल गइल आ रामप्रीत के हुकुम भइल कि सब सरवन के जीअते फूँक दिआव। ना रही बाँस आ ना बाजी बँसुरी। साँप के मरला का बादो मुँह कूँच दिआला। ओसहीं ए रामफलवा के गतर-गतर काट के फूँक दिआव।…फेर, कवनो सार के मूड़ी उठावे के हियाव ना पड़ी।…"

सउँसे गाँव से सूखल लकड़ी आ चउकी एकट्टा हो गइल। जेकरा जवन चीझ मिलल आ गइल। घर में के तेल जवरियाइल आ डालडा टीन-के-टीन आ गइल। चिना सज गइल—ओमें आग जरे लागल। रामप्रीत जब कटार लेके लगे पहुँचले त रामफल घृणा से उनका मुँह पर थुक देलस। सउँसे मुँह बोथा गइल। महतो लोग रामफल के गतर काट-काट के पहिले आग में डालल आ फिर उनकर लोथ ओही में फेंक दिहल। उनका सँघ-तियनो के ईहे हाल भइल। धू-धू कके आग जरे लागल। चारुओर चिराइन गन्ध फइल गइल। एही बीच केने से दो आके सुन्नरी जिअते ओह आग में अपने कूद गइल।

गाँव के एगो गरीब सोनार के पनरे-सोरे बरिस के लइका किरासन तेल बेंच-बेंच के गुजर करत रहे। जब ओकरा से किरासन तेल मांगल गइल त ऊ लाथ क देलस। भीड़ ओकरा घर में ढुक के दू टीन तेल ढूँढ़ लेलस आ ओकरा के भर हीक कुहलस। ओहि में केहू कहल—'एहू सरवा के झोंक दे आग में!…झूठ बोलता…।'

अपना जीविका खातिर झूठ बोले वाला ओह बेचारा के भीड़ उठवले-उठवले ओही आग में डाल देलस। ओकर बूढ़ मतारी पहिले त हक्का-बक्का रह गइल आ बाद में भोंकार पार के रोवे लागल।

आज अनगुते से दंगा के खबर थाना का रहे बाकिर पुलिस के कहीं पता ना रहे। महतो टोली के नवजवान आग का चारुओर चौकस खड़ा होके खोर-खोर के लाश जरावत रहलन आ आग के लपट ऊपर-ऊपर ले उठके एह शहादत के इतिहास आकास का पन्ना पर बनावत रहल।

भोर होत-होत ओजा एको चुटकी राख ना बाँचल। सभी लोग सहोर के नाहर में दहवा दिहल ताकि विहान भइला पुलिस का कवनो निसानी ना मिले।

गाँव के महतो लोग एकोरी देश में लोकतंत्र का तस्वीर पर राख डालत रहल आ दोसरा ओर पूरा चमटोली गवे-गवे अदंक में डूबल आन गाँव का चमटोली में सँसरत रहल।

पह फाटल त रामफल का शहादत के लहोक जइसे पूरा पूरबी क्षितिज पर फइल के लाल टेस हो गइल रहे।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एगो आउर अभिमन्यु

□

गम्हीरा के चाल-चलन बड़ लोका तनिको सोहाइल ना। पहिले लोग ओकरा के समुझावल, पोल्हावल, ऊँच-खाल के बात बतावल। जब ऊ एतनो पर मानल ना त सभे धमकावल, टांग तूड़ के लोथ क देवे के, जिनगी खराब क देवे के, घर में आग लगा देवे के बात उड़ल। गम्हीरो सुनत गइल, बूझत गइल। रोज-रोज चारूओर ऊ लोग के टूटल टांग देखते बा जे अपना सपना का लाश के अपने हाथे नोंच-नोंच के गिद्ध के खिला रहल बा, अपना साध में अपने हाथे आग लहका रहल बा।

गम्हीरा केहू के गारी-बात ना कहे, हरुस-पातर ना बोले। केहू का बहू-बेटी पर गलत निगाह ना फेरे, केहू के सिकाइत ना बोले। लाम-छरहर साँवर देह, लम्बा मुँह, घन बरौनी, घुँघराला केश, बड़-बड़ आँख, ऊपर का ओठ पर जतन से छाँटल छोट-छोट मोंछ, ओठ से झरे वाली मिसरी मतिन मीठ बोली। ओकर व्यक्तित्व कुल्ह मिला के मन के बाँधे वाला रहे। तेहू पर लोग ओकरा से अनराज रहत रहे काहे कि ऊ केहू से डेराय ना। जवन बात के साँच बूझे, ओकरा के कतहीं केहू का मुँह पर बोल देवे में ओकरा असक ना लागे। गलती करेवोला बड़ बा कि छोट, सैकड़न-हजारन बिगहा के जोत बा कि रहे के पलानियो नइखे-एकर बराबा उ ना करे। उ जब कवनो गरीब के बेबात मालिक से पिटात-लसरात देखे, दिनभर जांगर चलवला का बादो सांझ के गृहस्थ किहाँ से कवनो ओजे बिना मजूरी लेले घरे लवट के बिना खइले-पियले भूखले पेटे बाल-बच्चा का सँगे सुत रहला के बेवसी देखे, पेट के आग बुतावे खातिर केहू के मजबूरी में अस्मत लुटायत देखे त ओकरा देह में आग लाग जाव। ओकरा बुझाव ना कि उ का करो कि ई सभ मेंट जाव!

पढ़े में बड़ा तेज रहे गम्हीरा। कबहूँ अपना क्लास में सेकेंड ना कइलस। मैट्रिक तक ले त केहुँग पढ़िए गइल बाकी आगा कवलेज जाए के सावग नाहियें बइठल। बहुत मन रहे पढ़े के, खूब ज्ञान हासिल करे के बाकी उ सब मन के मने में रह गइल। बाप-मतारी का लगे रहे का जे जोगाड़ लगइते। ओहू में नउवें क्लास में जब रहे गम्हीरा त बपसी एगो अचके भइल बिमारी से ना बच सकलन! बाँच गइल एगो अधेड़ मतारी आ ब्राले के आइल ओकर कनिया—बसन्ती! एह तीन परानी का मधे एगो पुस्तैनी छोट घर रहे आ दू बिगहा ले जमीन। एसे का होइत। पढ़ाई के काम बन्द हो गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पढ़ाई खतम करे के पड़ल मजबूरी में, गरीबी का ओजे। गम्हीरा के मन कहीं बहुत भीतर ले कचोट गइल। साल भर ले ऊ बहुत उदास रहल—कवनो काम में जीव ना लागे। जहाँ रहे फिकिरे मातल बूझीं। ओठ झुराइल रहे, कपड़ा लसराइल रहे माथ पर लकीरे लकीर खींचाइल रहे। बपसी रहस ना। अपना अलावा दू परानी के जरूरत पूरा करे के धरम गम्हीरे के रहे। एसे कवनो नोकरी पा जाए खातिर ऊ मोतिहारी से मुजफ्फरपुर, आ पटना ले एको उठा ना धइलस। कहाँ ना गइल, केकर-केकर चिरौरी ना कइलस, केकरा दुआर के माटी ना खोन देलस! बाकी, नोकरी ना मिलल। ऊ एगो गरीब रहे, मैट्रिक तक पढ़ला से का! कवनो दमगर पैरवी रहित त कुछ तिरइवो करित!

ईहे सब करत दू बरिस आउर बीत गइल। एह बीचे ओकरा ढेर देखे-सुने पढ़े के मिलल। जेने नजर जाय ओनहीं तबाही, जेकरा के देखे ऊहे उघार! केहू के पेट खाली बा, देह उघार बा त केहू के पेट भरलो पर मन उघार बा। सभे ओकरा लगटे लउकत रहे भीतर-भीतर खखार भइल! एह सब के ओकरा मन पर बड़ी चोट पड़ल। जाने-अनजाने ऊ एगो राह ध लेलस। सँगमिलुआ मीठ सुभाव का ओजे ओकर असर लोग पर पडल। ऊ घरे घरे, मँड़ई-पलानी का भीतर-बाहर आपन बात कहे-सुने लागल। लोग का मदद में आपन समय देवे लागल।

गम्हीरा का ई देख के बडा अचरज भइल कि मालिक लोका खेत में अंडे-बच्चे भिनसहरा से लेके एक पहर रात ले काम कइलो पर कर पर सुबहित बसतर नइखे चढ़त आ ना पेट भर एको जून अन्न जुड़ता। गरीब का मिहनते के लोग सोख लेता। टीक से ना खइला-पियला से मेहनत करे के ओकर तागद घटत जाला आ जब जवानी के जोम होखे के चाहीं तबे बूढ़ापा के झटका लागे लागेला! गरीब के देहो मालिक के, ओकर मेहनो-धीया मालिक के। पेट के भनसार जे करावो।

गम्हीरा के मन रह-रह के काँप जाव। एही बीच घटना-पर-घटना होत गइल। गम्हीरा गाँवा-गाईं घूमे लागल। लोग से बतिआवे लागल। ऊ दस-बीस गाँव का गरीब-मजूरा लोगन के बिटोर के एगो सगठन खड़ा करे के चाहत रहे जे ना खाली आपन मजूरी बढ़ावे खातिर एक जुट होखो बलुक एक दोसरा के मददो करे खातिर होखो। जे गरीब बा ऊ ई चीन्हो कि ओकरा बाजू के का मोल बा, ओकरा श्रम के का कीमत बा! गम्हीरा के अथक परिश्रम आ दिन-रात लगल-भीड़ल रहला से ई काम एक तरे से हो गइल। पूरा जिला में ई संगठन बन गइल जवना मे सयान आ जवाने ना रहस—बूढ़ो रहस, कनियो रहस, लइकियो रहस. सभे सजग हो गइल रहे। तीन बरिस के मेहनत सफल हो गइल आ पूरा जवार मे कतहीं कवनो अन्याय होखे, अत्याचार होखे, बलात्कार होखे—माने कतहीं खर्हो खरके त गम्हीरा ओजा हाजिर हो जास आ ओह टोला के गरीब एकजुट होके विरोध करस! काम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्द, मदद बन्द ! मालिक लोग बाबू लोग के कुल्ह फुटानी त मजूरने पर होला। बहुत जगे अब जमीन वाला धनी-मानी लोग झुकल तब आस-पास सभतर के बबुआन तड़ना गइल—ओ लोके कान खड़ा हो गइल ! ईहे बात रहे कि गम्हीरा का चाल-चलन के वड़ लोग नापसन्द करे लागल आ तरे-तरे का जाल में ओकरा के फँसावे के कोशिश में जुट गइल।

जगे-जगे से गम्हीरा पर दरखास्त पड़े लागल—ऊ चोर ह, डकइत ह, सेन्ह मारेला, त लागल फसल कटवा लेला, त गरीब का लड़किन के फुसुला फुसुला के बेचेला त····का दो-का दो लिखलिख के फेंकाये लागल। खरचो-बरच भइल आ पुलिस का फाइल में गम्हीरा एगो नक्सलाइट बन गइल जे चोरी, डकइती, लूट-पाट, रहजनी; अगलगी आ हत्या सभ करे खातिर तेयार रहेला। बाकी गम्हीरा बिदुकल ना, डेराइल ना। ऊ त अपना भय के घोर के पी गइल रहे।

एही बीचे ऊ जेलो गइल कुछ दिन खातिर। जवार भर ओकर मोकदमा लड़ल। जब छूट के आइल त अपना संगठन का नेह से ओकर मन भींजल-भींजल रहे लागल।

बटाईदारी के कानून पास भइल आ सधान-पटान के एलान सरकार कइलस त पूरा जवार में संघर्ष के धार अचानके तेज हो गइल। बाबू-भइया के जमीन अगर कवनो नान्ह-जात पइसा-पइसा जोड़ के लिखवले रहे तवन त लाठी का बले धरा गइल बाकी गरीबवन के जमीन जवन बन्हक धराइल रहे बड़ लोग किहाँ सेकरा पँजरा जाए के हियाव मोसकिल रहे। गम्हीरा आगा बढ़ल आ अइसन ममिला में खेत जोताए लागल, फसल कटाए लागल ! गांव के गाँव मिल के दखली करे। समूचा गांव एक ओर आ मुट्ठी भर जिमदार एक ओर। एक ओरी जन बल रहे त दोसर ओरी धन के बल ! कै जगे गोली चलल, कुछ लोग दवरे पर साफ हो गइल बाकी झंझट रूकल ना। सवाल जिअका के हो गइल रहे, जीए के हो गइल रहे ! एसे दूनू दल मरे-मारे में हिचकत ना रहे। वड़ लोग का छल-बल रहे, धन रहे, पुलिस रहे, हाकिम लोग रहे। समय का पलटा खइला से अतने अन्तर पड़ल रहे कि हाकिम-हुकाम आ पुलिस-दारोगा लोग मालिक लोग से माल त टाने बाकी खुल्लम-खुल्ला मदद ना करे। तवहूँ ओ लोग मदद के हजार रास्ता होला।

महन्थ का लगभग ढेर खेतन पर लोग बटाई के दावा क देले रहले। जवार भर में छिटाइल उनुका अपना खेत के ठीक चिन्हासियो ना मालूम रहे। लोगे जोते-बोए। जवन मन करे तवन दे देस आ गरीब-गुरबा का जीए के अलम भेंट जाय ! बाकी, अब त खेतवे हड़प लेवे के चाहतारे सन····। सरकारो ससुरी एकनिए के हो गइल बिआ। वोट में वड़ लोग के निहोरा होई, ऊ लोग दउड़ी-घूपी, धूर फाँकी, बोगस गिरवाई आ जीत गइला पर ई एमेले-मंत्री सब गीत गइहन स ओही ढोंढ़ाई-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगरू के।....बटाईदारी आ सधान-पटान के कानन पास कके त सरकार महन्थ का मठ के दीवारे ढाहे पर लागल बिआ। अइसनको भला कहीं होला ? कतना जतन आ अकिल से धूरे-धूर कके त ई जँजाद बटुराइल आ अब सरकार एकरा के अइसहीं बाँट के जस लूटे के चाहतिया।....

महन्थ एक तरे से जवार का बड़ लोगन के मेंठ रहले त गम्हीरा गरीबन के अगुआ रहे। एसे दूनू आदमी एक-दोसरा पर नजर रखले रहे। महन्थ का नाँव पर गम्हीरा गारी त ना दे बाकी ओकर चेहरा खीसे लाल हो जाय आ मुट्ठी कसा जाय—'महन्थवा पक्का घाघ ह, कसाई ह। साधू का चोला में एक हजार रावन समा गइल बा।'....केहू गम्हीरा के नाँव ले लेव त बस महन्थ का खीस-पीत के ठेकाना ना रह जाय। लागस एक साँस में ओकरा के तारे, ओकरा बाप-मतारी-मेहर के गरिआवे।

दूनू ओर से ममिला तनात गइल आ महन्थ का कतनो छटपटइला पर जब गरीब आपन बटाई के दखल छोड़े के तेयार ना भइले सन त महन्थ ढेर चिन्ता में पड़ले। उनुका सोझा दुइएगो रस्ते रह गइल-गम्हीरा के अपना में मिला लिहल आ ना त ओकरा के राह से हटा दिहल। ऊ पहिलका राह अपनवले। कोशिश कइले। प्रलोभन दिहले, रुपया, पइसा आ जमीन-जायदाद देवे के। बाकी, गम्हीरवा डोलल ना।

एक दिन दूपहर में गम्हीरा कुछ नवहा लोका जवरे अपना गाँव से दू मील थाना का भीरि बजार में बइठ के चाय पियत रहे कि थाना के एगो सिपाही आइल—'गम्हीरा जी अपने के दरोगा जी बोलवलीं हँ ?'

—'काहे के हो ?'

—ना मालूम। कुछ जरूरी बात करे के बा।

गम्हीरा सोच में पड़ गइल। का काम हो सकता ? कहीं ओकरा के बन्न करे के त नइखन सोचत। थाना में गइल ठीक होई ? छव-पाँच में पड़ल देख के सिपाही बोलल—'दस मिनट बात क लीहल जाव त नीक होई।'

—'हमरा चाय पियते भागे के बा। हम काल्ह आके बात क लेब। रौरा कह देब दारोगा जी से। आज सिरसाँ गइल जरूरी बा। ना जाए से झंझट हो जाई।'

सिपाही चल गइल। बाकी, गम्हीरा का बुझाइल कि ई भीतरे ताव खात गइल ह ! थाना के बोलाहट आवे आ एगो दरिदर अदना आदमी ना जाय—ई ओकरा ना सहाइल। कइसन जवाना आ गइल। ओकरा मुँह से सरकार खातिर एगो मोट गारी निकलते रहे कि दारोगा जी अपने झटकल चलल आवत लउकले।

—'सरकार, ऊ सरवा त धरीछन का दोकान में बइठ के चाय पियता। कहलीं हँ कि सरकार बोलवतानीं त कहलस ह कि काल्ह भिलब !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'का करब। ईहे टैमे बा। जवना का भगई पेन्हे के लूर नइखे तवनो आँखे देखावता····। कुछ क द त नोंकरी से हाथ धोअ आ ना त भीतरे कुंधुरत रह। चोला कुफुत में पड़ गइल बा।'

—'पुलिस त ना घर के रह गइल बा आ ना घाटे के!' सिपाही हुँकारी भरलस।

—'नोकरी करे के बा त सभ सारन के तरवा सुघरावे के पड़ी हो पाँड़े! हमहीं ओकरा से बतिया लेतानीं। अकेले बा?' दरोगा जी पूछलन।

—'जी ना हुजुर, चार-पाँच गो लौंडा बाड़न स। छँटले-छँटल!····' सिपाही जी का ई प्रस्ताव शायद नीक ना लागल रहे कि दारोगा जी खुदे गम्हीरवा से दोकान में जाके बतिआस। बाकी, कुछ बोलले ना। हाकिम के बात रहे। कवनो अइसने बाते होखे।

दारोगा जी दोकान में ढुकले त गम्हीरा खाढ़ होके प्रनाम कइलस—'हम त सिपाही जी से कहलीं हँ कि काल्हु अपने से भेंट क लेब। आज सिरसाँ स ई खबर ले आइल बाड़े कि जल्दी ना पहुँचला पर झंझट बढ़ जाई?····"

दारोगा जी बइठत कहले—'ईहे सभ बतिआवे के बा। ई कब ले चली? पुलिस त अउरो फजीहत में पड़ल बिआ। ना एनहीं के आ ना ओनहीं के।····'

—'काहे। पुलिस त झंझट चाहेले दारोगा जी। जतने रार-झगड़ा बढ़ी ओतने न गोटगर माल भेंटाई।····" कह के गम्हीरा हँसे लागल।

—'का माल मिली गम्हीरा जी! जीव पयमाल हो गइल बा। जेकरा मन करता ऊँट खानी गरदन उठवले थाना में ढुकल चल आवता।····अइसन कुछ उपाय होइत कि मिल-जुल के ममिला फरिआ जाइत त तनी हमनियो का साँस-में-साँस आइत!' दारोगा जी गम्हीरा का हँसी पर पलभर भीतरे तिलमिला गइलन बाकी ऊपर से मुसकियात बात बढ़वले।

—'गरीब कै घड़ी लड़ी? केकरा से लड़ी? ई त जीऐ मरे के नौबत आ गइल बा। सरकार चाहतिया कि गरीब के भलाई होखे, ओकरा लिलार में सुख सटाव बाकी महन्थ जी अइसन चीकन लोग अतना घाघ का कि मनसा पूरने नइखे होखे देत। महन्थ जी ममिला फरिआवे के चाहते नइखन··?'

—'अब महन्थ ऊ नइखन रह गइल। उनुकर मनिका ढह गइल बा। सब ताव झर गइल बा। ऊ अपने आके कह गइले ह कि गम्हीरा के कहीं कि सब ममिला फरिया जाव···!'

—लेकिन हमरा त कुछ चाही ना। ऊ हमरे के देवे के चाहत बाड़े। अइसना में का बात होई?' गम्हीरा सन्देह से कहले।

—'ना-न।। जेकर जवन दावा बा ओह सभ पर विचार क लिहल जाव आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इर गरीब के कुछ हिसाब-किताब हो जाव । कुछ दावा बटाईदार छोड़ देव आ कुछ जमीन महन्थ छोड़स । सल सलट जाव ?' दारोगा जी प्रस्ताव रखले ।

—से त ठीक बा । बतकहिए से कवनो रास्ता निकलेला । बाकी, बतकही होई कहवां ? हम त मठ पर जाएब ना !....' गम्हीरा कहलन ।

—'काहे, मठ पर का कोका बइठल बा ? हम खुद चलब । पुलिस सँगे रही । बात साफ-साफ क के, जवन तय हो जाय दूनू पार्टी ओही अनुसार करो ।' दारोगा जी सुझाव दिहले ।

—'हमहूँ सोचत बानीं कि ममिला तय हो जाव । सभे अपना काम-धाम में लागो । महन्थो के ढेर नोकसान बा । कुछ उनुका कल्याण करे के चाहीं ।... जब तय करीं, हम बतिआवे खातिर तेयार बानीं । कुछ आउर लोके बोलावल जाई ।....'गम्हीरा कहलन ।

—'शुभ काम में देर का । तहरा पर सभका विसवास बा । जे तूँ तय कर देब, ऊ सभे मान जाई । हमनी तुरन्ते चल चलीं त साँझ का पहिलहीं सब झंझट ओरा जाई । सिरसाँ चलहीं के बा । ओजाँ से होत मठ पर आध घंटा में पहुंचल जा सकेला !' दारोगा जी खड़ा होत कहलन ।

गम्हीरा सकपकाइल । बिना कुछ सोचले-बिचरले का बात होई ? ममिला फरिया लिहल नीमने बा । मठ में हम अकेला रहब आ महन्थ अपना आदमी-जन का जवरे ।...खैर, पुलिस का सँगे दरोगो जी रहिहें ।....''

गम्हीरा के आग-पाछ में पड़ल देखके दारोगा जी बांह धके कहलन— 'चल, चल, काम जनता जल्दी हो जाव ओतने नीमन !'

अन्त में सभे चल दिहल । गम्हीरा का जवरे भी एगो सँघतिया लाग गइल । एक घंटा का पहिलहीं सभे मठ पर पहुँच गइल । महन्थ सभकर स्वागत कइले— गम्हीरो के बड़ा आदर से बइठवले । जल-जलखई का बाद बात चले लागल ।

बात संसरे के त रहे ना । कवनो बात पर महन्थ अड़ गइले—'ई कइसे होई ! हम बिका जाएब बाकिर....!'

—'त जाए दीं । हम गरीबन के सौदा करे रउआ से नइखीं आइल ।'

—'बात त तहरा फरिया के जाए के बा गम्हीरा । तूँही सभ झंझट के जड़ बाड़ ।...'

—का करब रउरा अतना कुल्हि राख के । के बा रउरा ? काहे माया में फँसल बानीं ? रामो जी त कोल-भील-वानर के हित में काम कइलें । राउर जस गवाये लागी अगर....।'

—'काल्ह के छँवर हमरा के उपदेश देवे लगल । तहरे बुझाए लागल कि माया आ महामाया का ह, पाप-पुन्न का ह ! बाप के नाँव साग-पात बेटा के नाँव परोरा !....'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गम्हीरा के बात बीचे में काट के महन्थ जी इत्था से उखड़ गइले आ लगले जोर-जोर से चिल्लाए, गरजे। उनकर गरजन-तरजन सुनके एने-ओने बइठल-लुकाइल गन लोग हड़हड़ा के चहुँप गइल। देखते-देखते गम्हीरा चारू ओर से घिर गइल। गम्हीरा का ई बूझत देर ना लागल कि बतकही से सुलहा करे के ई नाटक एगो प्रपंच रहल ह, एगो जाल रहल ह जवना में गम्हीरा के जीव अब फंस गइल बा। ओकरा बिसवास हो गइल कि अब ओकर बाँचल मुश्किल बा। उ निहत्थे बा, अकसरूआ बा आ एजवाँ महन्थ के पचीसन आदमी लाठी-भाला लेले तयनात बा! गम्हीरा का संगे जे आइल रहे उहो पान ले आवे फेरु सड़क का मोड़ पर चल गइल रहे।

—'ईहे सरवा सभ झंझट के जड़ बा। एकरे के साफ क द स। मार द स सार के। ना रही, ना जहर उगिली। साँप के दाँत तुड़ला से नोमन साँप के मारिए दिहल होला।....' महन्थ जी गरजले।

महन्थ का आदमियन के लाठी हुमचल। आज एगो आउर अभिमन्यु चक्रव्यूह का बंवड़ेरा में फंस गइल रहस।

गम्हीरा एक हाली दारोगा जी कावर तकलस। ओकरा आँख मे ओरहन आ नफरत रहे—'दारोगा जी, ई प्रपंच रहल ह हमरा के मारे के!'

दारोगा जी एकोरी चुपचाप खड़ा रहले। गम्हीरा से नजर मिलते उ सोझा से हट गइले। कुछ देर लाठी चलल। एगो पड़ल डंटा उठा के गम्हीरो कुछ देर अड़लस बाकी उहे भइल जवन....। गम्हीरा चोट खाके गिर गइल। कपार फाट गइल रहे। महन्थ आपन बन्दूक लें आके 'ठाँय!' से गोली दाग दिहले। गोली छाती में लागल आ...गम्हीरा शान्त हो गइल।

एगो चिनगारी जागल रहे उ सुत गइल। जयद्रथ के गोली अभिमन्यु के त मार देलस बाकी व्यवस्था के रक्षक पुलिस अर्जुन लेखा कवनो जयद्रथ वध क प्रण ना ठनलस।

गम्हीरा मारा गइल। सउँसे जवार में महामारी लेखा ई खबर भोर होत-होत चारुओर फइल गइल।....गम्हीरा मार देहल गइल। जे गरीब गुरबा रहे ओ लोका आँख से झर झर लोर ढरे लागल। जे जहाँ रहे सन्न हो गइल। सभे भागल थाना कावर। पहिले त लाशो ना भेंटात रहे बाकी दस बजते -बजते उहाँ दस हजार से ढेर लोग बटुरा गइल त झख मार के लाश देवे के पड़ल।

गम्हीरा एगो डकइत रहे बड़का लोग का नजर में। गम्हीरा एगो नक्सलाइट रहे पुलिस का रेकार्ड में आ गम्हीरा एगो जरत-बरत चिनगारी रहे एगो देवता रहे पूरा जवार के गरीब तबका का नजर में!

जब गम्हीरा के लाश ओकरा दुआरी पर पहुँचल त ओकर बसन्ती पछार खाके गिर गइल। ओकरा लगे दू बरिस के नन्हका टुकुर टुकुर अपना बाप का लाश के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ताकत रह गइल। महतारी के लोर झरत रहे। उ चिल्ला के गाय खानी डकरत रहे

बसन्ती आ गम्हीरा का मतारी का जवर हजारन लोग के भीड़ अपना आँख मे लोर लेले ठाढ़ रहे। देखते देखत रंथी सजाइल आ फूल माला से तोपा गइल। उघारे देहे खाली पैर अतना लोग जुटल कि बसन्ती के गम हलुका गइल। जेही सुने से काम धाम बन्न कके तुरते धावे लागे।

बसन्ती के दाँत दूनू ओठ के रह-रह के जाँत देवे। उ अपना नन्हका के मूड़ी पर हाथ धके सभ का सोझा किरिया खईलस कि "हम मेहरारू होके भी ओह काम के करत रहब जवन हमार मरद पूरा ना कर सकलन!'

मनसे भीड़ हुँकार उठल—'गम्हीरा जिन्दाबाद! बसन्ती जिन्दाबाद!!....'

मसान घाट जात में गम्हीरा का रथी का संगे दस-बारे हजार लोग चलल। अइसन मउअत बड़ा भगमान के होला। बसन्ती सोचलस कि गम्हीर ओकरा आ ओकरा नन्हका खातिर ढेर कुछ छोड़ गइल बाड़न। ओकर लोर सूख गइल!

चार-पाँच दिन बादे जब कलक्टर साहेब सरकार का ओर से पाँच हजार रुपया देवे बसन्ती किहाँ पहुँचले त बसन्ती बाघिन खानी बिफर गइल—चेक लेके टुकी-टुकी कके उनुका सोझे फेंक देलस—'....हमरा आदमी के मरवा के सरकार उनका लोहू के मोल देतिया।....हमरा दया ना चाहीं, भीख ना चाहीं!!....''

कलक्टर चिहा गइलन। उनुकर अकबक बन्न हो गइल।

—'....हम गरीब बानीं! गरीब का दया ना चाहीं, मरउवत ना चाहीं।.... ओकरा आपन हक चाहीं। उ हक खातिर लड़त मार दिहल गइलें....त हम हक लेब, लड़ के लेब....हमार बेटा लड़ के ली....ई हजारन-लाखन गरीब लोग आपन हक ली!....आ लड़ के ली! ...'

बसन्ती का आँख में जइसे आग धनकत होखे। उ अपना नन्हका के गोदी मे लेके झमक के भीतर चल गइल। कलक्टर साहेब चुपचाप कुछ देर लं ठाढ़ रहले आ मूड़ी नीचा कइलें अपना जीप पर बइठ के चल दिहलें।

दुआर पर इकट्टा भीड़ अपने से चीख उठल'—गम्हीरा जिन्दाबाद! लड़ के लेंगे....अपना हक!!....' भीतर से बसन्ती आइल आ आके ऊहो हाथ ऊपर उठा-उठा के नारा लगावे लागल।

कलक्टर के जीप गाँव का सड़क पर धूरा उड़ावत चलल जात रहे।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.